

श्रीरत्नप्रज्ञाकर ज्ञानपुष्पमावा पुष्प नंबर ३४ ।

श्रीरत्नप्रभसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ।

श्रीमद्

॥ सय्यम्भवसूरिप्रणीतम् ॥

अथश्री

दसविकालिक सूत्र मूल पाठ ।

संशोधक

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय

मुनि ज्ञानसुंदर

प्रकाशक

शाहा नथमलजीमूलचंदजी

मु. सादरी (मारवाड)

प्रथमा वृत्ति १०००

वीर संवत् २४४९.

अमूह्य जेट.



प्रस्तावना

अहो आगमरसिक महाशयो ! परम कृपालु जगवान् वीर वर्धमान प्रभुए सकल जीवहित कारिणी दुखवारिणी संसारनिस्तारिणी कर्म विदारिणी अधमोद्धारिणी मिथ्यात्व निवारिणी अजिनवाश्चर्यकारिणी हृदय हारिणी वादशांगवाणी अर्ध मागधी वाणी वर्णन करी ठे जे वाणी त्रणे कालमां त्रणे लोकमां अने त्रणे अवस्थामां आत्मानुं परम कट्याण करे ठे जे जव्यजीवो तर्या तरे ठे अने तरसे ते सघळुं वीतराग वाणीनुं महात्म्य ठे. पांचमा आरामां एकवीस हजार वर्षपर्यंत वीतरागनी वाणी कायम रहेशे वाणी रूपी वीरशासन अखंरु प्रवाहे चादशे अने तेमां अहिंसा जगवतीनु मुख्य स्थान श्रीदशवैकालिका सूत्र श्री शयंजव सूरी महाराजे उद्धृत करी प्रसिद्ध कर्तुं ठे जेमां ' ११० ' गाथाउं ठे. तेमां ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण तत्व साक्षात् कार देखाय ठे ज्ञानविना सघळुं अंधारुं ठे "ज्ञानी स्वासोस्वासमे करे कर्मको ठे ह " " आत्माज्ञानजवं पापं आत्मज्ञानेन मुच्यते" पढमं नाणं तउं दया एवंचिच्छ सबसंजए "एगंजाणइ सोसवं जाणइ सबंजाणइ सोएगं जाणइ " एवं खुनाण्णिसारं जंनहिंसइ किंचणं " ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः " शब्द

(२)

ज्ञानान्मुक्तिः “ पदार्थज्ञानान्मुक्तिः ” इत्यादि अनेक वचनोष्ठी
संपूर्ण खात्री ठे के ज्ञानशीज परम पद मली शके ठे अने
ज्ञान स्वरूप आत्मा ठे “ ज्ञानाधिकरणत्वं आत्मलक्षणं ” सं-
र्वग्रंथशी सर्व पंथशी अने सर्व महापुरुषोष्ठी एकज अवाजे
स्वीकृतथएलुं ठे के ज्ञान पद एज मुख्य पदार्थ ठे अने तेनी
पुष्टिमां दर्शन अने चारित्र ठे ज्ञानविना दर्शन चारित्र न
कामां ठे ज्ञानविना बीजा पदार्थो एकमाविनाना मीमाजेवा
फोगट ठे जीवविनाना खाली खोखाठे. शिक्काविनाना खोटा
रूपीया ठे प्राण प्रतिष्ठाविना प्रतिमा न कामी ठे. तप जप
संजम क्रिया अनुष्ठान प्रमार्जन प्रतिद्वेखनादि सकल क्रियाउं
ज्ञान गर्जित होवाशी ज सफल गणाय ठे अने एटला माटे
महापुरुष ज्ञान दर्शन अने चारित्र रूप मुख्य पदार्थ स्वीका-
र्यां ठे ए त्रणतत्त्वनुं यथार्थविवेचन आ सूत्रमां करी बताव्युं ठे
साद्यंतपर्यंत वांचवाशी एटले श्रवण मनन निदिध्यासन पूर्व
क आराधन करवाशी बराबर समजी शकाशे ज्ञानीनुं ज्ञान
अगाध ठे अने मनुष्यनी बुद्धि स्वल्प होय ठे तो पण पुरु-
षार्थ करवाशी ज्ञानावर्णीय कर्म ह्योपसम आय ठे. प्रांते सर्व
कर्म ह्ये शवाशी आत्मा पारंगत आय ठे. अजर अमर अक्रि-
य बने ठे माटे सकल कर्मनां जग्घकाउनुं अंत करवा माटे
ज्ञाननी आराधना करवी एज जव्यजीवोनुं मुख्य कर्त्तव्य ठे
आ परम पवित्र कर्त्तव्यमां कटिबद्ध थई सूत्र सुधारसनुं पान
करो बीजां सघदां सूत्रो क्रमे क्रमे विज्ञेद थई जसे परंतु पांच-

मा आरानां ढेला दिवस सूधी आसूत्रना चार अध्ययनो रहेशे
अने तेथी ज दुपसहसूरी फटगुश्री साधवी नागिल्लश्रावक ना-
ग श्री श्राविका विमलवाहन राजा धर्म रुचि प्रधान ए ठ जी-
वोआ सूत्रनी आराधना करी एकावतारी अशे शासननां स्थं-
ज समान तथा शासननां शिखर समान शासन जीवन आ सूत्र
ढे. तेनी यथाशक्ति आराधन करो विघ्नविदारक कट्याण
कारक जवजलतारक आपरमागम. महा सूत्र ढे. त्रिकरण
शुद्धिथी समाराधन करो

शिवमस्तु सर्व जगतः परहितनिरता जवन्तुचूतगणाः
दोषाःप्रयान्तुनाशं सर्वत्र सुखी जवन्तुलोकाः
सुयदेवयाए जगवई नाणावरणीय कमसंधायं
तेसिंखवेजसययं जेसिं सूय सायरे जत्ति
आजोयण ढाण हिययं सुरनरतिरि आण हरिस संजणणी
सरस रसवस्स ढंदा सुहमत्ता जयज जिण वाणी
सुज्जेषु किम् बहुना

ज्ञान बगीचेके पुष्पोंको कब सुंघोगे ?

श्री पार्श्वप्रज्जुके पांचमे पट्ट श्रीमाळी, और पोरवाल, वंश
स्थापन करनेवाले श्री सयंप्रजसूरीके पट्ट पर ओशवंशोत्पन्न
करनेवाले श्रीमद्रूपकेश (कमला) गङ्गाधिपति श्रीरत्नप्रजसूरीजी
महाराज स्मरणार्थ श्री रत्नप्रजाकर ज्ञानपुष्पमाळाका पुष्प.

- | | |
|--------------------------------|----------------------------------|
| १ श्री प्रतिमाढत्तिशी. ०-०-६ | २ गयधरविदास. ०-४-० |
| ३ दानढत्तिशा. ०-०-६ | ४ अनुकंपाढत्तिशी. ०-०-६ |
| ५ प्रश्नमाळा प्रश्न. १००-०-१-० | ६ स्तवन संग्रह जा. १ ०-१-० |
| ७ पैतीश बोद. ०-१-० | ८ दादासाबकी पूजा. ०-१-० |
| ९ चर्चाका पब्लिक नोटीस जेट. १० | देवगुरु वन्दनमाळा. ०-१-० |
| ११ स्तवन संग्रह जा. २ ०-१-० | १२ दिगनिर्णय. ०-१-० |
| १३ स्तवन संग्रह जा. ३ जेट | १४ सिद्धप्रतिमा मुक्तावली. ०-०-० |
| १५ बत्तीस सूत्रदर्पण. ०-३-० | १६ जैननियमावली जेट |
| १७ ०४ आशातना. जेट | १८ मंके पर चोट (चर्चा) जेट |
| १९ आगमनिर्णय. ०-१-० | २० चेत्यवंदन स्तवनादि. जेट |
| २१ जैनस्तुति. ०-१-० | २२ सुबोध नियमावली ०-०-६ |
| २३ प्रज्जुपूजा ०-०-६ | २४ जैनदीक्षा. जेट |
| २५ व्याख्याविदास ०-१-० | २६ शोकना प्रबन्ध जा १) ०-१-० |
| २७ शोकना प्रबन्ध जा. २) ०-१-० | २८ " " जा ३) ०-१-० |
| २९ " " जा. ४) ०-१-० | ३० " जाग ५ ळपते है |
| ३१ सुखविपाक मूल सूत्रम् ३१ | " जाग ६ जेट |
| ३३ दशवैकादकसूत्र मूल " ३४ | " जाग ७ जेट |

पत्ता—श्री रत्नप्रजाकर ज्ञान पुष्पमाळा मु० ओसीयां
जीला जोधपुर—मारवार.

॥ अहंम् ॥

॥ श्रीमद् शय्यञ्जवसूरीप्रणीतम् ॥

श्री दशवैकालिक सूत्र मूल पाठः

(अनुष्टुप्वृत्तम्)

धम्मो मंगल-मुक्किं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं
नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्स पुप्फेसु,
जमरो आविरई रसं ॥ न य पुप्फं कित्तामेई, सो य पीणेइ
अप्ययं ॥ २ ॥ एमे ए समणा मुत्ता, जे दोए संति साहुणो ॥
विहंगमाव पुप्फेसु, दाणजत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं
लज्जामो, न य कोइ उवहम्मई ॥ अहागग्गेषु रीयंते, पुप्फेसु
जमरा जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा; जे जवंति अणिसि-
या ॥ नाणापिंरु रया दंता, तेण बुच्चंति साहुणो त्ति बेमि ॥ ५ ॥
इति दुम्मपुप्फिय नाम पढमं अज्ञयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

कहन्नु कुज्जा सामन्नं, जो कामे न निवारए ॥ पएपए विसी-
यंतो, संकप्पस्सं वसंगळं ॥ १ ॥ वड्ड गंध-मलंकारं, इड्डिउं
सयणाणि य ॥ अड्डंदा जे न जुंजंति, न से चाइ त्ति बुच्चई
॥ २ ॥ जेय कंते पिए जोए, लज्जे विप्पिठि कुवई ॥ साहीणे
चयई जोए, से हु चाइ त्ति बुच्चई ॥ ३ ॥

(काव्यम्.)

समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ॥ न

सा महं नोवि अहंपि तीसे, इच्चेव ताउं विणिएज्ज रागं ॥ ४ ॥
 आया वया ही चय सोगमहं, काम कमाही कमियं खुडुक्कं ॥
 णिंदाहि दोसं विणिएच्च रागं, एवं सुही होहि सिसंपराए ॥ ५ ॥

(अनुष्टुप् वृत्तम्.)

परकंदे जलियं जोइं, धूमकेउं डुरासयं ॥ नेहंति वंतयं जुत्तं,
 कुल्ले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥ धिरह्नु ते ऽजसोकामी, जो तं
 जीविय कारणा ॥ वंतं इहसि आवेउं, सेयं ते मरणं जवे ॥ ७ ॥
 अहं च जोगरायस्स, तं च ऽसि अंधगवह्णिणो ॥ मा कुल्ले
 गंधणा होमो, संजमं निहुउचरं ॥ ८ ॥ जइ तं काहिसि ज्ञावं
 जा जा दिहसि नारिउं ॥ वाया विज्जोव हम्भो, अत्तिअप्पा जवि-
 स्ससि ॥ ९ ॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुजासियं ॥
 अंकुसेण जहा नागो, धम्भे सं पन्निवाइउ ॥ १० ॥ एवं करंति
 संबुद्धा, पंरिया पवियस्सणा ॥ ११ ॥ विणियट्ठंति जोगेसु जह्हा
 से पुरिसोत्तमो त्ति वेमि ॥ ११ ॥

इति सामन्न पुत्रीय नामं ऽज्जयणं सम्मत्तं ॥ २ ॥

संजमे सुत्तिअप्पाणं, विप्प मुक्काण ताइणं ॥ तेसिं-मेय-
 मणाइन्नं, निगंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥ उद्देसियं कीयगरं, नियागं
 अत्तिहन्नाणि य ॥ राइज्जत्ते सिणाणे य, गंध मल्ले य वीयणे ॥
 संनिही गिहिमत्ते य, रायपिंके कि-मिहए ॥ संवाहण दंत पद्दो-
 यणा य, संपुण्ण देह पलोयणा य ॥ ३ ॥ अत्तावए य नात्तिए,
 उत्तस्स य धारऽण्णए ॥ तेगिहं पाहणा पाए, सत्तारंजं च
 जोइणो ॥ ४ ॥ सिज्जायर पिंके च, आसंदी पंलियंकए ॥ गिहं-

तर निसिजाए, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥ गिहिणो वेयाव-
 म्भियं, जाइआजीववत्तिया ॥ तत्ता-निबुम्भु ज्ञोइत्तं, आउर
 स्सरणाणि य ॥ ६ ॥ मूळए सिंगबेरे य, उब्भु खंभे अ निबुम्भे ॥
 कंदे मूळे य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥ सोवच्चले
 सिंधवेत्तोणे, रोमात्तोणे य आमए ॥ सामुद्दे पंसुखारे य, कात्ता-
 लोणे य आमए ॥ ८ ॥ धूवणित्ति वमणे य, वञ्चिकम्म विरे-
 यणे ॥ अंजणे दंतवणे य, गायाजंग विञ्जसणे ॥ ९ ॥ सब-
 मेय-मणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥ संजमंमि य जुताणं,
 लहुञ्जय विहारिणं ॥ १० ॥ पंचासव परिन्नाया, तिगुत्ता ठसु
 संजया ॥ पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उञ्जु दंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउरु ॥ वासासु पम्भिसं-
 लीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥ परीसह रिउ दंता, धूय-
 मोहा जिइंदिया ॥ सब दुख पहीण्णा, पक्कमंति महेसिणो
 ॥ १३ ॥ दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ॥ के इन्न देव-
 लोएसु, केइ सिज्जंति नीरया ॥ १४ ॥ खवित्ता पुव्व कम्माइं, संज-
 मेण तवेण य ॥ सिद्धिमग्ग-मणुपत्ता, ताइणो परिनिबुम्भे, त्ति वेमि
 ॥ १६ ॥ इति खुम्भुगतिआयार कहा नामं तइयं अश्रयणं सम्मत्तं-

गद्यम्.

सुयं मे आउसं तेणं, जगवया एव-मारकयं ॥ इहखलु उज्जी-
 वणिया नामउज्जयणं, समणेणं, जगवया महावीरेणं, कासवेणं
 पवेइया, सु अरकाया, सु पन्नता, सेयं मे अहिज्जिउं, अज्जयणं,
 धम्म पन्नति ॥ १ ॥ कयरा खलु सा उज्जीवणिया नामउज्जयणं
 समणेणं जगवया महावीरेणं, कासवेणं, पवेइया, सु अरकाया,

सु पन्नता, सेयं मे अहिज्जितं अज्जयणं धम्म पन्नत्ति ॥ २ ॥
 इमा खलु सा ढ्ढीवणियानामज्जयणं, समणेणं जगवया महा-
 वीरेणं कासवेणं पवेइया, सु अस्काया, सु पन्नता, सेयं मे अहि-
 ज्जितं अज्जयणं धम्म पन्नत्ति ॥ तं जहा-पुढविकाइया १, आ-
 उकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया
 ५, तस्सकाइया ॥ ६ ॥ पुढवि चित्तमंत-मस्काया, अणेग
 जीवा, पुढो सत्ता, अन्नन्न सन्न परिणएणं ॥ १ ॥ आउ चित्त-
 मंत-मस्काया, अणेग जीवा, पुढो सत्ता, अन्नन्न सन्न परिणएणं
 ॥ २ ॥ तेउ चित्तमंत-मस्काया, अणेग जीवा, पुढो सत्ता
 अन्नन्न सन्न परिणएणं ॥ ३ ॥ वाउ चित्तमंत-मस्काया, अणेग
 जीवा, पुढो सत्ता, अन्नन्न सन्न परिणएणं ॥ ४ ॥ वणस्सइ
 चित्तमंत-मस्काया अणेग जीवा, पुढो सत्ता, अन्नन्न सन्न परिण-
 एणं; तंजहा-अग्गवीया, मूलवीया, पोरवीया खंधवीया, बीय-
 रुहा, समुद्धिमा, तण, लया ॥ वणस्सइकाइया, स वीया, चित्त-
 मंत-मस्काया, अणेग जीवा, पुढो सत्ता, अन्नन्न सन्न परिणएणं
 ॥ ५ ॥ से जे पुण इमे अणेगे, वहवे तसा पाणा ॥ तं जहा-
 अंरुया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, समुद्धिमा उप्रिया,
 उववाइया, जेंसिं केंसिं च पाणाणं, अज्जिकंतं, पम्किंतं, संकुचियं,
 पसारियं, रुयं, जंतं, तस्सियं, पत्ताइयं, आगइ गइ; विन्नाया,
 जे य कीरु पयंगा, जा य कुंशुं पिप्पीलिया, सब्बे बेइंदिया, सब्बे
 तेइंदिया, सब्बे चउरिंदिया, सब्बे पच्चिंदिया सब्बे तिरिक्कजोणि-
 या, सब्बे नेरइया, सब्बे मणुया, सब्बे देवा, सब्बे पाणा, परमाह-
 भिमया ॥ एसो खलु ढ्ढो जीवनिकाउं, तस्स काउं त्ति पवुच्चइ

॥ ६ ॥ इच्छेसिं ऽएहं जीवनिकायाणं, नेव सयं दंरुं समारं
 जिजा, नेवऽन्नेहिं दंरुं समारंजाविजा, दंरुं समारंजंतेऽवि
 अन्ने न समणुजाणेजा, जावजीवाए, तिविहंतिविहेणं, मणेणं,
 वाया ए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि अन्ने न
 समणुजाणामि, तस्स जंते, पन्निक्कमामि निंदामि, गरिहामि,
 अप्पाणं वोसिरामि ॥ पढमे जंते महवए पाणाऽवायाउं
 वेरमणं, सबं जंते पाणाऽवायं पच्चरकामि से सुहुमं वा,
 वायरं वा, तस्सं वा, आवरं वा, नेव सयं, पाणेअऽवाएजा,
 ने वऽन्नेहिं, पाणेअऽवायाविजा, पाणेअऽवायंतेऽवि अन्ने न
 समणु जाणेजा, जावजीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए,
 काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि अन्ने न समणुजा-
 णामि, तस्स जंते, पन्निक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं
 वोसिरामि ॥ पढमे जंते महवए, उवच्छिउमि, सवाउं पाणाऽ-
 वायाउं वेरमणं ॥ १ ॥ अहावरे दुच्चे जंते महवए, मुसावायाउं
 वेरमणं, सबं जंते मुसावायं पच्चरकामि । से कोहावा, लोहावा,
 जया वा हासा वा नेव सयं मुसं वाएजा, नेवऽन्नेहिं मुसं
 वायाविजा, मुसं वायंतेऽवि अन्ने न समणुजाणेजा; जावजी-
 वाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए, काएणं, न करेमि, न
 कारवेमि करंतंऽपि अन्ने न समणु जाणामि, तस्स जंते पन्नि-
 क्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ दुच्चे जंते
 महवए, उवच्छिउमि, सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥ २ ॥ अहा-
 वरे तच्चे जंते महवए, अदिन्नादाणाउं वेरमणं, सबं जंते अदि-
 न्नादाणं पच्चरकामि से, गामे वा नगरे वा, रन्ने वा, अप्पं वा,

बहु वा, अणुं वा, श्रूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव
 सयं अदिन्नं गिह्णिजा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिह्णाविजा अदिन्नं
 गिण्हंतेऽवि अन्ने न समणुजाणिजा, जावजीवाए, तिविहं
 तिविहेणं, मणेणं; वायाए काएणं; न करेमि; न कारवेमि,
 करंतंऽपि अन्ने न समणुजाणामि, तस्स जंते, पन्निक्कममि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ तच्चे जंते मह-
 वए, उवच्छिंमि, सवाउं अदिन्नादाणाउं वेरमाणं ॥ ३ ॥ अहा-
 वरे चउत्ते जंते महवए; मेहुणाउं वेरमाणं; सबं जंते मेहुणं पच्च-
 र्कामि; से दिवं वा, मणुस्सं वा; तिरिक्कजोणियं वा; नेव सयं
 मेहुणं सेविजा; नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेजा; मेहुणं सवंतेऽवि
 अन्ने न समणु जाणिजा; जावजीवाए; तिविहं तिविहेणं;
 मणेणं; वायाए; काएणं; न करेमि; न कारवेमि; करंतंऽपि अन्ने
 न समणु जाणामि; तस्स जंते; पन्निक्कमामि; निंदामि; गरि-
 हामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥ चउत्ते जंते महवए; उवच्छिंमि;
 सवाउं; मेहुणाउं वेरमाणं ॥ ४ ॥ अहावरे पंचमे जंते महवए-
 परिग्गहाउं वेरमाणं; सबं जंते परिग्गहं पच्चर्कामि; से अप्पं वा;
 बहुं वा; अणुं वा; श्रूलं वा; चित्तमंतं; वा; अचित्तमंतं वा;
 नेवसयं परिग्गहं परिगिह्णिजा; ने वऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हा;
 विजा; परिग्गहं परिगिह्णंतेऽवि अन्ने न समणु जाणिजा; जाव-
 जीवाए; तिविहं तिविहेणं; मणेणं, वायाए; काएणं; न करेमि;
 न कारवेमि; करंतंऽपि अन्नेनसमणुजाणामि; तस्स जंते; पन्नि-
 क्कमामि; निंदामि; गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥ पंचमे
 जंते महवए; उवच्छिंमि; सवाउं परिग्गहाउं वेरमाणं ॥ ५ ॥

अहावरे ढठे जंते वए; राईजोयणाळ वेरमाणं; सबं जंते राई-
जोयणं पच्चरकामि; से असणं वा; पाणं वा; खाइमं वा; साइमं
वा; नेव सयं राई जुंजिजा; नेवऽन्नेहिंराई जुंजाविजा राई
जुंजंतेऽविअन्नेन समणुजाणिजा; जावजीवा ए; तिबिहं तिबि-
हेणं; मणेणं, वायाए; काएणं; न करेमि; न कारवेमि; करंतं-
ऽपि अन्ने न समणुजाणामि; तस्स जंते; पन्निक्कमामि; निंदामि;
गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥ ढठे जंते वए; उवठिठमि, सवाळ
राईजोयणाळ वेरमाणं ॥६॥ इच्चेइयाइं; पंच महवयाइं; राईजो-
यण वेरमाण ढठाइं; अत्त हियठयाए; उवसंपज्जि ताणं विहरामि ॥

से जिख्खू वा; जिख्खूणी वा; संजय; विरय; पन्निहय पच्च-
रकाय पावकम्मे; दिया वा; राळ वा; एगळ वा; परिसागळ वा;
सुत्ते वा जागरमाणे वा; से पुढविं वा; जिंत्ति वा; सिद्धं वा; लेळुं
वा; ससररक्कं वा कायं; ससररक्कं वा वड्डं; हड्डेण वा; पाएण वा;
कठे ण वा; किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा; सिद्धागए वा;
सिद्धागहड्डेण वा; नात्तिहिजा; न विद्धिहिजा, न धट्टिजा
नज्जिंदिजा, अन्नं नात्तिहाविजा, न विद्धिहाविजा, न घट्टा-
विजा, न जिंदाविजा, अन्नं आत्तिहंतं वा, विद्धिहंतं वा, घट्टंतं
वा, जिंदंतं वा न समणु जाणिजा, जावजीवाए तिबिहं तिबि-
हेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि
अन्ने न समणुजाणामि, तस्स जंते, पन्निक्कमामि, निंदामि,
गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ से जिख्खू वा, जिख्खूणी
वा, संजय, विरय, पन्निहय पच्चरकाय पावकम्मे, दिया वा,
राळ वा, एगळ वा, परिसागळ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा,

से उदगं वा, उसंवा, हिमं वा; महियं वा, करगं वा; हरतणुगं वा; सुद्धोदगं वा; ऊदउद्धं वा कायं; उदउद्धं वा वडं; सस-
 णिद्धं वा कायं; ससणिद्धं वा वडं; नामुसिजा; न सफुसिजा;
 नाविलिजा; न पवीलिजा; न अस्कोरिजा; न परस्कोरिजा, न
 आयाविजा, न पयाविजा; अन्नं नामुसाविजा; न संफुसा-
 विजा; न अवीलाविजा; न पवीलाविजा, न अस्कोराविजा,
 न परस्कोराविजा, न आयाविजा, न पयाविजा, अन्नं आमु-
 संतं वा, संफुसंतं वा, आवीलंतं वा, पवीलंतं वा, अस्कोरंतं
 वा, परस्कोरंतं वा, आयावंतं वा, पयावंतं वा, न समणुजा-
 णिजा, जावजीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं,
 न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि अन्ने न समणुजाणामि,
 तस्सजंते, पन्निक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि-
 रामि ॥ २ ॥ से जिख्खू वा, जिख्खूणी वा, संजय, विरय,
 पन्निहय पच्चरकाय पावकम्मे, दिया वा, राउ वा, एगउं वा,
 परिसागउं वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगाल
 वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणिं
 वा, उक्कं वा, न उजिजा, न घटिजा, न जिदिजा, न उजा-
 लिजा, न पजालिजा न निवाविजा, अन्नं न उजाविजा, न
 घट्टाविजा, न जिंदाविजा, न उजालाविजा, न पजालाविजा-
 न निव्वविजा, अन्नं उजंतं वा, घटंतं वा, जिंदंतं वा, उजा-
 लंतं वा, पजालंतं वा, निवावंतं वा, न समणुजाणिजा जाव-
 जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं न करेमि,
 न कारवेमि, करंतंऽपि अन्ने न समणुजाणामि, तस्स जंते,

(९)

पम्क्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ३ ॥
से जिख्खू वा, जिख्खूणी वा, संजय, विरय, पम्हय पच्च-
स्काय पावकम्मे, दिया वा, राउं वा, एगउं वा, परिसागउं
वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहूयणेण वा,
ताखियंटेण वा, पत्तेण वा, पत्तजंगेण वा, साहाए वा, साहा-
जंगेण वा, पिहूणेण वा, पिहूण हत्तेण वा, चेदेण वा, चेद
कन्नेण वा, हत्तेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वा
वि पुग्गलं, न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा, न
वीयाविज्जा, अन्न फुमंतं वा, वीयंतं वा, न समणुजाणिज्जा,
जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं; मणेणं, वायाए, काएणं, न
करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि, अन्ने न समणुजाणामि, तस्स
जंत्ते, पम्क्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि
॥ ४ ॥ से जिख्खू वा, जिख्खूणी वा, संजय, विरय, पम्हप
पच्चस्काय पावकम्मे, दिया वा, राउं वा, एगाउं वा, परिसागउं
वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीय पइंसेसु वा,
रूढेसु वा, रूढ पइंसेसु वा जायसु वा, जाय पइंसेसु वा, हरिएसु
वा, हरिय पइंसेसु वा, णिन्नेसु वा, णिन्न पइंसेसु वा, सच्चित्तेसु
वा, सचित्त कोल पम्निनीसीएसु वा, न गन्धिज्जा, न चिच्छिज्जा,
न निसीएज्जा, न तुयट्टिज्जा, अन्नं न गन्धाविज्जा, न चिष्ठा-
विज्जा, न निसीयाविज्जा, न तुयट्टाविज्जा, अन्नं गन्धंतं वा,
चिंठंतं वा, निसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा, न समणुजाणिज्जा,
जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं न
करेमि न कारवेमि, करंतंऽपि अन्ने न समणुजाणामि, तस्स

जंते, पम्किमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि
॥ ५ ॥ से जिख्लू वा, जिख्लूणी वा संजय, विरय, पम्हिय
पच्चरकाय पावकम्मे, दिया वा, राउं वा, एगउं वा, परिसागउं
वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीरुं वा, पयंगं वा, कुंथुं, वा,
पिप्पिद्वियं वा हउंसि वा, पायंसिवा, बाहुंसिवा, उरुंसिवा,
उदरंसिवा, सीसंसि वा, वउंसि वा, पम्भिग्गहंसि वा, कंबलंसि
वा, पायपुत्तणंसि वा, रयहरणंसि वा, गह्णगंसि वा, उंरुगंसि
वा, दंरुगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेजंसि वा, सथा-
रगंसि वा, अन्नयरंसि वा, तहप्पगारे, उवगरण जाए, तउंसं-
जयामेव, पम्भिलेहिय, पम्भिलेहिय, पमज्जिय पमज्जिय, एगंत
मवणिज्जानोणं संघाय—मावज्जिजा ॥ ६ ॥

(अनुष्टुबृत्तम्)

अजयं चरमाणो य, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फलं ॥ १ ॥
अजयं चिचमाणो य, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फलं ॥ २ ॥
अजयं आसमाणो व, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फलं ॥ ३ ॥
अजयं सयमाणो य, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फलं ॥ ४ ॥
अजयं जुंजमाणो य, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं ज्ञासमाणो य, पाण ज्ञूयाइं हिंसइ ॥
 बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ ककुयं फळं ॥ ६ ॥
 कहं चरे कहं चिठे, कहं-मासे कहं सए ॥
 कहं जुंजंतो ज्ञासंतो, पावकम्मं न बंधई ॥ ७ ॥
 जयं चरे जयं चिठे, जयं-मासे जयं सए ॥
 जयं जुंजंतो ज्ञासंतो, पावकम्मं न बंधई ॥ ८ ॥
 सब ज्ञूयऽप्पज्ञूयस्स, सम्मं ज्ञूयाइं पासउं ॥
 पिहियासवस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधई ॥ ९ ॥
 पढमं नाणं तउं दया, एवं चिठइ सब संजए ॥
 अन्नाणी किं काही, किं वा नाहीय सेय पावगं ॥ १० ॥
 सोच्चा जाणइ कट्ठाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ॥
 उन्नयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥
 जो जीवेवि न याणाई, अजीवेवि न याणाई ॥
 जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाही य संजमं ॥ १२ ॥
 जो जीवेवि वियाणाई, अजीवेवि वियाणाई ॥
 जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाही य संजमं ॥ १३ ॥
 जया जीव-मजीवे य, दोवि एए वियाणइ ॥
 तया गइं बहुविहं, सब जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥
 जया गइं बहुविहं, सब जीवाण जाणइ ॥
 तया पुन्नं च पावं च, बंध मोरकं च जाणइ ॥ १५ ॥
 जया पुन्नं च पावं च, बंध मोरकं च जाणइ ॥
 तया निबिंदए ज्ञोए, जे दिवे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
 जया निबिंदए ज्ञोए, जे दिवे जे य माणुसे ॥

(१२)

तया चयइ संजोगं सङ्गितरं बाहिरं ॥ १७ ॥
जया जयइ संजोगं, सङ्गितरं, बाहिरं ॥
तया मुंके ऋवित्ताणं, पवइए अणगारियं ॥ १८ ॥
जया मुंके ऋवित्ताणं, पवइए अणगारियं ॥
तथा संवर-मुक्कं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥
जया संवर-मुक्कं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥
तया धुणई कम्म रयं, अबोहि कलुसं कं ॥ २० ॥
जया धुणई कम्म रयं, अबोहि कलुसं कं ॥
तया सबत्तगं नाणं, दंसणं चाज्जिगह्णई ॥ २१ ॥
जया सबत्तगं नाणं, दंसणं चाज्जिगह्णई ॥
तया लोग-मल्लोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
जया लोग-मल्लोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥
तया जोगे निरंजित्ता, सेलेसिं पणिवज्जई ॥ २३ ॥
जया जोगे निरंजित्ता, सेलेसिं पणिवज्जई ॥
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गह्णइ नीरुत्तं ॥ २४ ॥
जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गह्णइ नीरुत्तं ॥
तया लोग मल्लयत्तो, सिद्धो हवइ सासुत्तं ॥ २५ ॥

(अर्यागीतिवृत्तम्)

सुहसायगस्ससमणस्स, सायाउल्लगस्सनिगामसायस्स उब्बो-
ल्लणा पयोयस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसग्गस्स ॥ २६ ॥ तवो
गुणप्पहाणस्स, उज्जुमइ खंति संजमरयस्स ॥ परीसहे जिणं
तस्स सुल्लहा सुगइ तारिसग्गस्स, ॥ २७ ॥ पण्णावि ते पयाया,

खिष्यं गह्वंति अमर जवणाइं ॥ जेसिं पियो तवो संजमो य,
खंतीय बंजचेरं च ॥ १८ ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

इच्चये ढङ्गीवणियं, सम्महिठि सया जए ॥ दुव्वहं लजितु
सामन्नं, कम्मणा न विराहिजासि, त्तिबेमि ॥ १९ ॥ इति ढङ्गी-
वणिया नामं चउह्वं अञ्जयणं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

॥ संपत्ते जिस्क कालंमि, असंजंतो अमुञ्जितं; इमेण कम्म
जोगेणं, जत्त पाणं गवेसए ॥ १ ॥ से गामे वा नगरेवा; गोय-
रग गउंमुणी; चरे मंदमऽणुविग्गो, अवस्कित्तेण चेयसा ॥ २ ॥
पुरउं जुग मायाए; पेहमाणो महिंचरे; वच्चतो बीय हरियाइं,
पाणे य दग महियं ॥ ३ ॥ उवायं विसमं खाणु, विच्चलं परिव
द्यए; संकमेणं नगढ्ढेद्या, विच्चमाणो परक्कमे ॥ ४ ॥ पवरु ते वसे
तन्न, परकलंते व संजए, हिंसेद्य पाण जूयाइं, तस्से अडुव
थावरे ॥ ५ ॥ तम्हा तेणं नगढ्ढेद्या संजए सु समाहिए; सइ-
अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥ इंगालं ङारियं रासिं
तुसरासिं च गोमयं; ससरस्केहिं पाएहिं, संजउं तं नइक्कमे,
॥ ७ ॥ नचरेद्य वासे वासंते महियाए व परंतिए; महावाए
व वायंते, तिरिह्वं संपाइमेषु वा ॥ ८ ॥ नचरेज्ज वेस सामंते,
बंजचेर वसाऽणुए; बंजयारिस्स दंतस्स, होद्या तन्न विसोत्तिया
॥ ९ ॥ अणायअणे चरंतस्स; संसग्गीए अजिस्कणं; होद्य
वयाणं पीत्ता, सामन्नमि य संसउ ॥ १० ॥ तम्हा एयं विया-
णित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं; वच्चए वेस सामते, मुणी एगंत

मस्सिए ॥ ११ ॥ साणं सूइयं गाविं, दितं गोणं हयं गयं; संदि-
 प्रं कलहं जुइं, डुरउ परिवज्जए ॥ १२ ॥ अणुन्नए नावणए,
 अप्पहिठे आणाउत्ते; इंदियाइं जहा ज्ञागं, दमइत्ता मुणीचरे
 ॥ १३ ॥ देवदवस्स नगत्तेद्या, ज्ञासमाणो य गोयरे; हसंतो
 नाजिगत्तेद्या, कुलं उंच्चाऽवयं सया ॥ १३ ॥ आलोयं थिगलं
 दारं, संजिं दगन्नवणाणिय; चरंतो नविनिज्ञाए, संकठाणं वि
 वद्यए ॥ १५ ॥ रत्तो गिहवइणं च, रहस्सारक्कियाणिय; संकि-
 लेसकरं छाणं, डुरउ परिवद्यए ॥ १६ ॥ पम्भिकुठं कुलं नपविसे,
 मामगं परिवद्यए, अचियत्तं कुलं नपविसे, चिय त्तं पविसे कुलं
 ॥ १७ ॥ साणी पावार पिहियं, अप्पणा नाव पंगुरे; कवारं
 नोपणोद्धिया, उग्गहं से अजाइया ॥ १८ ॥ गोयरग्ग पवि
 षोय, वच्च मुत्तंन धारए; उगासं फासुयं नच्चा, अणुन्न विय
 वोसिरे ॥ १९ ॥ नीयं डुवारं तमसं, कोठगं परिवद्यए; अचख्खु
 विसउ जत्त, पाणा डुप्पक्खिहगा ॥ २० ॥ जत्तपुप्फाइं वीयाइं
 विप्पइत्ताइ कोठए; अहुणोवत्तित्तं उल्लं, दतुणं परिवद्यए ॥ २१ ॥
 एल्लगं दारगं साणं, वत्तगं वाऽविकुठए; उल्लंघिया नपविसे,
 विउहित्ताण व सजए ॥ २२ ॥ असंसत्तं पलोएद्या, नाइडुराऽ-
 वलोयए; उप्फुल्लं नविनिज्ञाए, नियट्ठिच्च अयंपिरो ॥ २३ ॥
 अइच्छूमिं नगत्तेद्या, गोयरग्ग गठं मुणी; कुलस्स जूमिं जाणित्ता,
 मिय जूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥ तत्तेव पम्भिलेहेद्या, जूमिज्जागं विय-
 र्कणो; सिणाणस्सय वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥ दग
 मट्ठिय आयाणे, वीयाणि हरियाणिय; परिवज्जंतो चिठेज्ञा,
 सविंदिय समाहिए; ॥ २६ ॥ तत्त से चिठमाणस्स, आहारे

पाण जोयणं; अकप्पियं नइञ्चिञ्चा, पन्निगाहिञ्च कप्पियं ॥२७॥
 आहारंती सिया तन्न, परिसान्निञ्च जोयणं; दिंतिय पन्नियाइस्के,
 न मेकप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥ समहमाणी पाणाणि, बीयाणिह
 रियाणिय; असंजमं करिं नच्चा, तारिसं परिवच्चए ॥ २९ ॥
 साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टियाणिय; तहेव समणसघाए;
 उदगं संपणोद्धिया ॥ ३० ॥ आगाहइत्ता चत्ता, आहार
 पाण जोयणं; दिंतियं पन्नियाइस्के, नमे कप्पइ तारिसं ॥ ३१ ॥
 पुरेकम्मेण हत्तेण, दविए जायणेण वा; दिंतियं पन्नियाइस्के, न
 मे कप्पइ तारिसं ॥ ३२ ॥ एवं उदउत्ते ससणिञ्जे, ससरस्के
 मट्टियाउसे; हरियात्ते हिंगुत्तुए, मणोसिद्धा अंजणे दोणे ॥३३॥
 गेरु य वन्नि य सेट्ठिय, सोर छिय पिठ कुकुसकए य, उक्कचमS-
 संसठे, ससट्टे चैव बोधवे ॥३४॥ असंसठेण हत्तेण, दविए जायणेण
 वा; दिक्षमाणं नइञ्चिञ्चा, पन्नाकम्मं जहिं जवे ॥ ३५ ॥ संसठेण
 हत्तेण, दविए जायणेण वा, दिक्षमाणं पन्निञ्चिञ्चा, जंतत्ते सणियं
 जवे ॥ ३६ ॥ दोन्हंतु जुंज माणाणं, एगोत्तन्न निमंतए; दिक्ष-
 माणं नइञ्चिञ्चा, हंदंसे पन्निवेहए ॥ ३७ ॥ दोन्हंतु जुंजमाणाणं,
 दोवि तन्न निमंतए; दिक्षमाणंपन्निञ्चिञ्चा, जं तत्ते सणियं जवे,
 ॥ ३८ ॥ गुब्बिणीए उवन्नत्तं, विविहं पाण जोयणं; चुंघमाणं
 विवञ्चेञ्चा, चुत्तसेसं पन्निच्चए ॥ ३९ ॥ सीयाय समणघाए,
 गुब्बिणी कात्तमासीणी; उच्छिया वा निसीएञ्चा, निसंना वा
 पुणोठए ॥ ४० ॥ तं जवे जत्त पाणं तु, संजयाण अकप्पियं;
 दित्तिपं पन्नियाइस्के, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४१ ॥ अणगंपिञ्चे-
 माणीय, दारगं वा कुमारियं; तंनिखिवित्तु रोयंतं, आहारेपाण

ज्ञोयणं ॥ ४२ ॥ तं जवे जत्त पाणं तु, संजयाण अकप्पियं;
 दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४३ ॥ जं जवे जत्त
 पाणं तु, कप्पाऽकप्पंमि संकियं; दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्पइ
 तारिसं ॥ ४४ ॥ दगवारेण पिहियं, निसाए पीढएण वा; लोढे-
 णवाऽविद्धेवण, सिद्धेसेण वि केणइ ॥ ४५ ॥ तंच उच्चिंदिउ
 दिजा, समण्णाए एव दावए; दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्पइ
 तारिसं ॥ ४६ ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा; जं
 जाणेषु सुणेष्यावा, दाण्णा पगमं इमं ॥ ४७ ॥ तं जवे जत्त
 पाणं तु; संजयाणं अकप्पियं; दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्प
 इतारिसं ॥ ४८ ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा;
 जंजाणेषु सुणेष्यावा पुन्नन्ना पगमं इमं ॥ ४९ ॥ तं जवे जत्त
 पाणं तु, संजयाणं अकप्पियं; दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्पइ
 तारिसं ॥ ५० ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा; जं
 जाणेषु सुणेष्यावा, वणिमन्ना पगमं इमं ॥ ५१ ॥ तं जवे जत्त
 पाणंतु, संजयाण अकप्पियं; दिंतियं पन्धिया इस्के, न मे कप्पइ
 तारिसं ॥ ५२ ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा; जं
 जाणेषु सुणेष्यावा; समण्णा पगमं इमं ॥ ५३ ॥ तं जवे जत्त
 पाणंतु; संजयाण अकप्पियं, दिंतियं पन्धियाइस्के, न मे कप्पइ
 तारिसं ॥ ५४ ॥ उद्देसियं कियगमं; पूइकम्मं च आहमं, अञ्जो-
 यर पामिचं; मीसजायंवि विद्धए ॥ ५५ ॥ उग्गमं सेय पूढेद्या;
 कस्सन्ना केणवा कं; सोच्चा निस्संकियं सुद्धं; पन्धिगाहिद्ध संजए
 ॥ ५६ ॥ असणं पाणगं वावि; खाइमं साइमं तहा; पुप्फेसु होद्य
 उम्मीस; वीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥ तं जवे जत्त पाणंतु;

संजयाणं अकप्पियं; दिंतियं पम्भियाइस्के; नमे कप्पइ तारिसं
 ॥ ५८ ॥ असणं पाणगं वावि; खाइमं साइमं तथा; उदगंमि-
 होच्च निखित्तं, उत्तिंग पाणगे सुवा ॥ ५९ ॥ तं जवे जत्त पाणंतु,
 संजयाणं अकप्पियं; दिंतियं पम्भियाइस्के, न मे कप्पइ तारिसं
 ॥ ६० ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तथा; अगाणिंमि होच्चनि
 खित्तं, तं च संघट्टिया दए ॥ ६१ ॥ तं जवे जत्त पाणंतु, संज-
 याणं अकप्पियं; दिंतियं पम्भियाइस्के न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६२ ॥
 एवंउस्सकिया उस किया, उंघालियापझालिया; निवावियाउ-
 स्सिंचिया, निस्सिंचया, उवत्तिया उवारियादए ॥ ६३ ॥ तं जवे
 जत्त पाणंतु, संजयाणं अकप्पियं, दिंतियं पम्भियाइस्के, न मे
 कप्पइ तारिसं ॥ ६४ ॥ हुऊ कं सिलं वावि, इट्ठालं वावि एगया-
 उवियं सकमंउट्ठाए, तं च होऊ चलाचलं ॥ ६५ ॥ नतेण जि-
 ख्खू गन्हेद्या, दीघो तच्च असंजमो; गज्जीरं ऊसिरं चव, सत्विं
 दिय समाहिए ॥ ६६ ॥ निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताण मा-
 रुहे; मंच कीलं च पासाय, समणउठाएव दावए ॥ ६७ ॥ डुरु-
 हमाणी पवमेद्या, हत्तं पायं च लुसए; पुढवी जीवे विहिंसेञ्जा-
 जे य तं निस्सिया जगा ॥ ६८ ॥ एयारिसे महादोसे जाणिक,
 ण महेसिणीं; तम्हामालोहरं जिस्कं, न पम्भि गिन्हंति संजया-
 ॥ ६९ ॥ कंदं मूलं फलं वावि, आमं च्चिनं व संनिरं; तुंवागं
 सिंग वेरंच, आमगं परिवरुए ॥ ७० ॥ तहेव सत्तु चुन्नाइ, को-
 लचुन्नाइ आवणे, संकुलिं फाणियं पुयं, अन्नं वावि तथा विहं
 ॥ ७१ ॥ विक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासियं; दिंतियं पम्भिया-
 इस्के, न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७२ ॥ बहु अच्चियं पुग्गलं, अणमिसवा

बहु कट्टयं; अन्नियं तिन्दुयं विद्धं, उद्धु खरुं व संबिलं ॥ ७३ ॥
 अप्पे सिया जोयणजाए, बहुउञ्जिय धम्मिए; दिंतियं पन्निइयास्के,
 न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७४ ॥ तहेवुच्चावयं पाणं; अडुवा वार
 धोयणं; संसेइमं चाउलोदगं; अहुणा धोयं विवञ्जए ॥ ७५ ॥
 जंजाणेष चिरा धोयं; मइए दंसणेण वा; पन्निपुञ्जिण सुच्चावा;
 जं च निस्सकियं जवे ॥ ७६ ॥ अजीवं परिणयं नच्चा, पन्निगा-
 हिण संजए; अह संकिए जवेद्या; आसाइत्ताण रोवए ॥ ७७ ॥
 ओवमासायणघाए, हन्नगंमि दलाहि मे; मा मे अचंबिलं पूइं, नालं
 तिन्हं विणित्तए ॥ ७८ ॥ तं च अचंबिलं पूइं, नालं तिन्हं विणित्तए;
 दिंतियं पन्निआइस्के; न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७९ ॥ तं च दुञ्ज अका-
 मेणं; विमणेण पन्निन्नियं; तं अप्पणा नपिवे; नोवि अन्नस्स दावए
 ॥ ८० ॥ एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पन्निदेहिया; जयं परिट्ठ-
 विञ्जा, परिठप्प पन्निक्कमे ॥ ८१ ॥ सियाय गोयरग्गउ, इञ्जेञ्जा
 परिजोत्तुयं; कोठगं जित्तिमूलंवा, पन्निदेहित्ताण फासुयं ॥ ८२ ॥
 अणन्नवित्तु मेहावी, पन्निन्नंमि संवुणे; हन्नगं संपमञ्जित्ता
 तन्न जूंञ्जिण संजए ॥ ८३ ॥ तन्न से जुंञ्जमाणस्स, अच्चियं
 कंटउ सिया, तण कठसकरं वावि, अन्नं वावि तहाविहं ॥ ८४ ॥
 तं उखिवित्तु ननिस्केवे, आसएण नन्नइए; हन्नेण तं गहेज्जणं,
 एगंतमवक्कमे ॥ ८५ ॥ एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पन्निदेहिया;
 जयं परिठविद्या, परिठप्प पन्निक्कमे ॥ ८६ ॥ सियायज्जिरकु
 इञ्जेद्या, सिद्धमागम्म जोत्तुयं; सर्पिरु पायमागम्म, उकुयं पन्नि-
 लेहया ॥ ८७ ॥ विणएणं पविसित्ता, सगासे गुरुणोमुणी; इरि-
 यावहीयमायाय, आगउय पन्निक्कमे ॥ ८८ ॥ आजोइत्ताण

(१९)

नीसेसं, अइयारं च जहकमं; गमणाऽगमणे चैव, जत्त पाणेव
संजए ॥ ८९ ॥ उजुपन्नो मणुव्विग्गो, अवस्सित्तेण चयसा,
आद्धोए गुरु सगासे, जं जहा गहियं जवे ॥ ९० ॥ नसम्ममा-
लोइयंहुद्या, पुविंपन्ना व जं कं, पुणो पन्निक्कमे तस्स, वोसइो
चित्तए इमं ॥ ९१ ॥ अहोजिणेहिं असावज्ज; वीति साहुण
देसिया; मोक्क साहण हेउस्स; साहु देहस्स धारणाः ॥ ९२ ॥
नमुक्कारेण पारित्ता. करित्ता जिण संथवं; सद्यायं पठवित्ताणं-
वीसमेव खणं मुणीः ॥ ९३ ॥ वीसमंतो इमं चित्ते, हियमळ्ळा,
जमच्छिउं; जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहु होद्यामि तारिउ ॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥ साहवोतो चियत्तेणं, निमत्तिव्व जहकमं; जइ तद्ध केइ
इत्तिद्या, तेहिं सच्चिं तु जुंजए ॥ ९६ ॥ अह कोइ न इत्तिद्या,
तउ जुंजेव्व एगउ; आद्धोए जायणे साहु, जयं अपरिसानियं ॥ ९७ ॥

(काव्यम्.)

तीतगं च कडुयं च कसायं, अंबिलं च महुरं च लवणं
वा; एय लळंमन्नफपउत्तं, महु घयं व जुंजेश्च संजए ॥ ९८ ॥

(अनुष्टुप्बृत्तम्.)

अरसं विरसं वावि, सुइयं वा असुइयं; उल्लं वा जइ वासुकं,
मंथु कुमास जोषणं ॥ ९९ ॥ उपन्नं नाइहीत्तिद्या, अप्पं वा बहु
फासुयं; मुहा लळं मुहाजीवी, जुंजेजा दोस वच्चियं ॥ १०० ॥
दुलहा उ मुहादाइ, मुहा जीवी वि दुल्लहा; मुहादाइ मुहाजीवी,
दोविगल्लंति सुग्गइं त्तिबेमि ॥ १०१ ॥ इत्ति पिंके सणाए पढमो
उहेसो समत्तं ॥ ९ ॥ १ ॥



पम्निग्गहं संखिहित्ताणं, लेवमायाए संजए; दुगंधं वा,
 सुगंधं वा, सबंजुंजे न उट्टुए ॥ १ ॥ सिञ्जा निसीहियाए, समा-
 वन्नोय गोयरे; आयावइछा जोच्चाणं, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
 तउ कारण समुप्पन्ने, जत्त पाणं गवेसए; विहिणा पुवजत्तेणं
 इमेणं उत्तरेणय ॥ ३ ॥ काद्धेण निरकमे जिख्कु, काद्धेण य
 पम्निक्कमे; अकालंच विवद्यित्ता काद्धे काद्धे समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरिसिजिख्कु, काद्धे न पम्निक्केहिसि; अप्पाणंच किल्ला-
 मेसि, संनिवेसंच गरहसि ॥ ५ ॥ सइकाले चरेजिख्कु, कुञ्जा
 पुरिसकारियं अत्ताजोत्ति नसीएञ्जा; तवोत्ति अहियासह ॥ ६ ॥
 तहावुच्चावया पाणा, जत्तछाए समागया; तं उज्जुयं नगह्हेञ्जा
 जय मेव परक्कमे ॥ ७ ॥ गोयरग्ग पविन्नोय, न निसीएञ्ज
 कब्बई, कहं च न पवंधेञ्जा, चिच्चित्ताणव सजए ॥ ८ ॥ ॥ अग्गलं
 फल्लिहं दारं, कवारं वावि संजए, अवलंबिया न चिच्छेञ्जा गोय-
 रग्ग गज मुणी ॥ ९ ॥ समणं माहणं वावि, किविणं वा वणी-
 मग्गं; उवसंकमतं जत्तछा, पाण्णाएव संजए ॥ १० ॥ तं अइ-
 कमितु न पविसे; नचिच्छे चक्खूगोयरे; एगंतमवक्कमित्ता, तउ
 चिच्चिच्च संजए ॥ ११ ॥ वणीमग्गस्स वा तस्स दायगस्सुजयस
 वा; अप्पत्तियं सिया हुञ्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
 पम्निसेहिएव दिन्नेवा, तउ तम्मि नियत्तिए, उवसंकमिञ्ज जत्त-
 छा, पाण्णा एव संजा ए ॥ १३ ॥ उप्पलं पजमं वावि, कुमुयंवा
 मग्गदंतियं, अन्नं वा पुप्फ सचित्तं, तं च संलुचिया दए ॥ १४ ॥
 तं जवे जत्त पाणुंतु, संजयाणं अकप्पियं, दिंतियं पम्नियाइस्के,
 न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥ उप्पलं पजमं वावि, कुमुयंवा

मगदंतियं, अन्नंवा पुष्प सचित्तं, तं च समहिया दए ॥ १६ ॥
 तं जवे जत्त पाणतु, संजयाणं अकप्पियं, दिंतियं पनियाइस्के,
 न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥ सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उप्प
 लन्नादियं, मुणादियं सासव नादियं, उल्लुखंरं अनिवुं ॥ १८ ॥
 तरुणं वा पवालं, रुक्कस्स तणगस्स वा; अन्नस्सवावि हरि
 यस्स, आमगं परिवच्चए ॥ १९ ॥ तरुणियं वा ङ्घिवानिं, आ-
 मियं जच्चियं सयं; दिंतियं पनियाइस्के, नमे कप्पइ तारिसं
 ॥ २० ॥ तहा कोल मणुसिन्नं, वेलुयं कासव नादियं; तिलपप्परुगं
 निमं, आमगं परिवच्चए ॥ २१ ॥ तहेव चाजलं पितं, वियंवा
 तत्तनिवुं; तिल पिठ पूइपिन्नागं; आमगं परिवच्चए ॥ २२ ॥
 कविठं माज्जिगं च, मूलगं मूल गत्तियं, आमं असत्त परिणयं,
 मणसावि न पत्तए ॥ २३ ॥ तहेव फल मंथुणि, बीयमंथुणि जाणिया;
 विहेल्लगं पियालं च, आमगं परिवच्चए ॥ २४ ॥ समुयाणं चरे
 जिखू, कुलं उच्चावयं सया; नीयं कुल मइक्कमं, उसढं नाज्जि-
 धारए ॥ २५ ॥ अदीणो वित्तिमेसेत्था, न विसिएच्च पंप्पि;
 अमुत्तिठं जोयसंमि, माइन्ने एसणारए ॥ २६ ॥ बहुपरघरे अत्ति
 विविहं खाइमं साइमं; न तत्त पंप्पिठं कुप्पे, इत्था दिच्च परो
 नवा ॥ २७ ॥ सयणा सयण वत्तं वा, जत्तपाणं च संजए; अ-
 दिंतस्स न कुप्पेत्था, पच्चस्के वि अदीसत्त ॥ २८ ॥ इत्तियं पुरिसं
 वावि, रुहरं वा महत्तगं; वंदमाणं न जाएत्था, नोयणं फरुसं वए
 ॥ २९ ॥ जे नवंदे न से कुप्पे, वंदित्त नसमुक्कसे; एवमन्ने समाणस्स
 सामन्नमणु चिच्छ ॥ ३० ॥ सिया एगइत्त लद्धं लोत्तेणं विणि-
 गूहइ; मामेयं दाइयं संतं, दत्तुणंसयमायए ॥ ३१ ॥ अत्तठा गुरुत्त

लुप्तो, बहु पावं पकुवड्; दुत्तोसज य सो होइ, निवाणं च न
 गन्नइ ॥ ३२ ॥ सिया एगइज लङ्गं, विविहं पाण जोयणं,
 जद्दगं जद्दगं जोच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥३३॥ जाणंतु ता इमे
 समणा, आययणी अयं मुणी, संतुणो सेवइ पंतं, लुहवित्ति सु-
 तोसज ॥ ३४ ॥ पूयणट्ठा जसो कामी, माण समाण कामए, बहु
 पसवइ पावं, माया सध्वंच कुवड् ॥ ३५ ॥ सुरं वा मेरगं वावि,
 अन्नं वा मद्यगं रसं, ससरकं न पिवे जिख्वू, जसं साररक मप्पणो
 ॥ ३६ ॥ पियए एगइज तेणो, नमे कोइ वियाणइ, तस्स पसह
 दोसाइ, नियकिंच सुणेह मे ॥ ३७ ॥ वड्ढइ सोंढिया तस्स, माया
 मोसंच जिख्वूणो, अयसोय अनिवाणं, सययं च असाहुया ॥३८॥
 निच्चुविगो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मइ, तारिसोमरणं तेवि,
 नाराहइ संवरं ॥ ३९ ॥ आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारि-
 सो, गिह्णविणं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥ एवंतु
 अगुण प्पेही, गुणाणं च विवज्जं तारिसो मरणतेवि, नाराहेइ
 संवरं ॥ ४१ ॥ तवंकुव्वइ मेहावी, पणीयं वच्चए रसं, मऊप्पमाय
 विरज, तवस्सी अइ उक्कसो ॥४२॥ तस्स पसह कङ्गाणं, अण्णेग
 साहू पूइयं, विजलं अन्नं संजुत्तं, कित्तइसं सुणेहमेः ॥४३॥ एवं तु
 गुण प्पेही, अगुणाणं च विवज्जं, तारिसो मरणं तेवि आरा-
 हेइ संवरं ॥ ४४ ॥ आयरिए आराहेइ समणे आवि तारिसो,
 गिह्णविणं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥ ४५ ॥ तव तेणे
 वय तेणे, रुव तेण्ये जेनरे; आयार जाव तेण्ये, कुव्वइ देव कि-
 व्विसं ॥ ४६ ॥ लङ्गणयवि देवत्तं, उववन्नो देव किव्विसे, तन्नवि
 से न याणाइ, किमे किच्चा इमं फलं ॥ ४७ ॥ तत्तोवि से चइत्ताणं,

द्वय एव मूयर्गं; नरग तिरिक्कजोणिंवा, बोही जन्नसु दुव्वहा
॥ ४७ ॥ एयंच दोसददुणं, नाय पुत्तेण जासियं; अणु मायं पि
मेहावी, माया मोसं विवच्चए । ४८ ॥

(काव्यम्.)

सिरिक्कण जिक्केसण सोहिं. संजयाणं बुद्धाण सगासे;
तन्न जिक्कू सुप्पिणि हिंदिए, तिव्व दच्च गुणवं विहरेद्यासि त्ति-
वेमि ॥ ५० ॥ इति पिंमेसणाए वीज्जहेसो पिंमेसणाए पंचमं
द्वयणं समत्तं ॥ ५ ॥

नाण दंसण संपन्नं, संजमेण तवे रयं; गणिमागम्म संप-
न्नं, उज्झाणंमि समोसदं ॥ १ ॥ रायाणो राय मच्चाय; माहणा
अडुव खत्तिया; पुत्तंति निहुय अप्पाणो. कहंजे आयार गोयरो
॥ २ ॥ तेसिं सो निहुज दंतो, सब जुय सुहावहो; सिरिक्कणसु
समा उत्तो, आइक्कइ वियक्कणो. ॥ ३ ॥ हंदि धम्मन्न कामाणं,
निगंठाणं सुणेह मे; आयार गोयरं जीमं, सयलं दुरहिच्चियं
॥ ४ ॥ नन्नन्न एरिसंबुत्तं, जं दोए परमदुच्चरं; विजलं चाण
जाइस्स, नच्चूयं नच्चविस्सइ ॥ ५ ॥ स ख्खुरुग वियत्ताणं, वाहि-
याणं च जे गुणा; अखंरु फुमिया कायवा, तं सुणेह जहा
तहा ॥ ६ ॥ दस अचय चाणाइं, जाइं बालो वरच्चइ; तन्न अ-
न्नयरे द्वाणे, निगंथा ताउं चस्सइ ॥ ७ ॥ वयठकंकायठकं,
अकप्पो गिहिजायणं; पक्खियंक निसिद्धा य, सिणाणंसोज्ज वच्च-
णं ॥ ८ ॥ तन्नमिं पढमंठाणं, महावीरेण देसियं; अहिंसा नि-
ज्जा दिछा, सब जूएसु संजमो. ॥ ९ ॥ जावंति दोए पाणा, तस्सा

अद्रुव आवरा; ते जाणमजाणं वा; नहणे नोविघायए ॥ १० ॥
 सव्वेजीवावि इहंति; जीवीजं नमरिच्चिजं; तम्हा पाणवहं घोरं
 न्निगंथा वच्चयंति एं ॥ ११ ॥ अप्पण्णा परा वा; कोहावा
 जइ वा जया; हिंसगं न मुसं बुया, नोवि अन्नं वयावएः ॥ १२ ॥
 मुसावाज य लोगंमि, सव्वसाहूहिंजरहिउं; अविस्सा सोय जुयाणं,
 तम्हा मोसंविवच्चए ॥ १३ ॥ चित्तमतमचित्तंवा, अप्पंवा जइवा
 वहुं, दंत सोहण मित्तंपि, जग्गहंसे अजाइया ॥ १४ ॥ ते अप्पणा
 नगिन्हंति, नोविगिन्हावए परं; अन्नंवा गिन्हमाणंपि, नाणु
 जाणंति संजया ॥ १५ ॥ अवंजचरियं घोरं, पमायं डुरही
 चियं; नायरंति मुणी लोए, जेयायण विवच्चए ॥ १६ ॥ मूलमे
 यमहमस्स, महादोस समुस्सय; तम्हा मेहुण संसग्गि, निगंथा
 वच्चयंति एं ॥ १७ ॥ विरुमुप्पे इमं लोणं, तिच्च, संपि व फाणियं;
 नते सन्निहि मिहंति, नाय पुत्त वज रया ॥ १८ ॥ लोचस्सेस-
 णुफासे, मन्नेअन्नयरामवि; जे सिया संनिहि कामे, गिही पव्वइ ए
 नसे ॥ १९ ॥ जंपि बहं व पायं वा; कंवदं पायपुञ्जणं; तंपि संजम
 लच्चचा, धारंति परिहरंतिय ॥ २० ॥ न सो परिग्गहो बुत्तो
 नायपुत्तेण ताइणा; मुञ्जा परिग्गहोबुत्तो, इइ बुत्तं महेसिणा
 ॥ २१ ॥ सब्बुवि हिंणा बुञ्जा, संरक्कण परिग्गहे; अविअप्प-
 णोऽवि देहंमि, नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥ अहोनिच्चं तवोकम्मं,
 सब्ब बुद्धेहिं बन्नियं; जा य लद्धा समावित्ती, एगजत्तं च ज्ञोयणं ॥
 ॥ २३ ॥ संतिमे सुहुमा पाणा. तस्सा अद्रुव आवरा; जाइं राउ
 अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥ २४ ॥ उद उह्वं बीय ससत्तं;
 पाणा निव्वरिया महिं, दियाताइं विवच्चिद्धा; राउ तह्व कंहं चरे

॥ १५ ॥ एयं च दोस ददुणं, नायपुत्तेण ञासियं; सवाहारं नञु-
 चंति, निगंथा राइञ्जोयणं ॥ १६ ॥ पुढविकायं नहिंसंति, मणसा
 वयसा कायसा; तिविहेणं करण जोएणं, संजया सु समाहिया
 ॥ १७ ॥ पुढविकायवि हींसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए; तस्सेय
 विविहे पाणे, चख्खुसे य अचख्खुसे ॥ १८ ॥ तम्हा एयं विया-
 णित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं, पुढविकायं समारंजं, जावजीवाए
 वञ्जए ॥ १९ ॥ आउकायं नहिंसंति, मणसा वयसाकायसा; तिवि-
 हेणं करण जोएणं, संजया सुसमाहिया ॥ २० ॥ आउकायंवि
 हिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए; तस्सेय विविहे पाणे, चख्खुसेय,
 अचख्खुसे ॥ २१ ॥ तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं
 आउकायं समारंजं, जावजीवाए वञ्जए ॥ २२ ॥ जायतेयं
 नइंति, पावगं जलंइत्तए; तिरुमउन्नयरंसंजं, सबउवि दुरासयं
 ॥ २३ ॥ पाइणं पणिणं वावि, उड्डं अणुदिसामवि; अहे दाहि-
 णउवावि, दहे उत्तरउ विय. ॥ २४ ॥ जूयाण मेसमाघाउ,
 हववाहो नसंसउ; तंपइव पयावठा, संजयाकिंचि नारंजे ॥ २५ ॥
 तम्हाएयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं; अगणिकायं समारंजं,
 जावजीवाए वञ्जए ॥ २६ ॥ अनिलस्स समारंजं, बुद्धा मन्नंति
 त्तारिसं; सावज्जं वहुलंचेयं, नेयं ताइहिं सेवियं ॥ २७ ॥ तालि-
 यंटेण पत्तेण, साहा विहुयणेण वा; नते वीइउमीडंति, वे यावे-
 ळण वापरं ॥ २८ ॥ जंपि वड्डं व पायं वा, कंवड्डं पायपुड्डणं,
 नते वाउ मुइरंति, जयं परिहरंति य ॥ २९ ॥ तम्हा एयं विया-
 णित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं; वाउकायं समारंजं, जावजीवाए
 वञ्जए ॥ ३० ॥ वण स्सइकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा;

तिविहेण करण जोएणं, संजया सुसमाहिया ॥४१॥ वणस्स इकायं
 विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए; तसेय विविहे पाणे, चख्खुसे य
 अचख्खुसे ॥४२॥ तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं, वण-
 स्सइकायं समारंजं, जावजीवाए वझण ॥४३॥ तस्स कायं नहिंसं-
 ति, मणसा वयसा कायसा; तिविहेणं करण जोएण, संजया सूस-
 माहिया ॥ ४४ ॥ तस्सकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए त-
 स्सेय विविहे पाणे, चख्खुसे य अचख्खुसे ॥ ४५ ॥ तम्हा एयं
 वियाणित्ता, दोसं दुग्गइ वड्डणं; तस्सकायं समारंजं, जावजीवाए
 वऊए ॥ ४६ ॥ जाइं चत्तारि जुत्थाइं, असणाहारमाइणि; ता-
 इंतु विवच्चंतो, संजमं अणुपालए ॥ ४७ ॥ पिंरु सिच्चं च वड्डं
 च, चउड्डं पायमेवयं; अकप्पीयं न इल्लेद्या, पणिगाहिस्स कप्पियं
 ॥ ४८ ॥ जे नियागं ममायं ति, कीयमुद्देसियाहरुं; वहंते सम-
 णुजाणंति, इय बुत्तं महेसिणाः ॥ ४९ ॥ तम्हा असण पाणाइं-
 कीयमुद्देसियाहरुं; वझयंति चिय मप्पणो, निग्गंथा धम्म
 जीविणो ॥ ५० ॥ कंसंसू कंस पाएसु, कुंरुमोएसु वा पुणो;
 जुजंती असण पाणाइं, आयार परिजस्सइ ॥ ५१ ॥ सीउदगं
 समारंजे, मत्तधोवणं उरुणे; जाइं उच्चंति जूयाइं, दिट्ठो तन्न असंजमो
 ॥ ५२ ॥ पन्ना कम्मं पुरेकम्मं, सिया तन्न न कप्पइ; एयमं
 न जुजंति, निग्गंथा गिहि जायणं ॥ ५३ ॥ आसंदी पल्लियकेसु,
 मंच मासादएसु वा; अणयारिय मज्जाणं, आसइतु सइंतु वा
 ॥ ५४ ॥ नासंदी पल्लियंकेसु, न निसिझाए न पीढए; निग्गंथा-
 पणिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिच्चा ॥ ५५ ॥ गंजीरं विजया एए, पाणा
 दुप्पणिलेहगा; आसंदी पल्लियं केयं, एयमं उच्चं विवच्चिया ॥ ५६ ॥

गोयरग पविष्ठस्स, निसेझा जस्स कप्पइ, इमेरिस्स मऽणाथारं,
 आवझइ अबोहियं ॥ ५७ ॥ विवत्ती बंजचेरस्स, पाणाणं च
 वहेवहो, वणीमग्ग पन्निघाउ, पन्नि कोहो आगारिणं ॥ ५८ ॥
 अगुत्ती बंजचेरस्स, इन्निउवावी संकणं, कुसीलं वड्डणं चाणं,
 दुरउ परिवझए ॥ ५९ ॥ तिम्हमऽन्नयरागस्स, निसेजा जस्स
 कप्पइ, जराए अज्जिचुयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
 वाहिउं वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पन्नए, बुकंतो होइ
 आयारो, जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥ संतिमे सुहुमा पाणा,
 घसासु ज्जिदगासूय, जे य ज्जिख्खु सिणायंति, वियन्नेणू प्पत्ता-
 वए ॥ ६२ ॥ तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा;
 जावजीव वयं घोरे, असिणाणं महिच्छिगा. ॥ ६३ ॥ सिणाणं
 अडुवा कक्कं, लोखं पउमगाणिय; गायसुवट्टण्ठाए, नायरंति
 कयाइवि ॥ ६४ ॥ निगणस्स वाविमुंरुस्स, दीह रोम नहंसिणो;
 मे हुणा उवसंतस्स, किंविञ्जूसाए कारियं ॥ ६५ ॥ विञ्जूसा व-
 त्तियं ज्जिख्खु, कम्मं बंधइ चिक्कणं; संसार सायरे घोरे, जेणं परु
 इडुरुत्तरे ॥ ६६ ॥ विञ्जूसा वत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं;
 सावद्यंबहुलं चेयं, नेयं ताइहिं सेवीयं ॥ ६७ ॥

(काव्यम्.)

खवंति अप्पाण ममोह दंसितो, तवेरया संजम अझवे गुणो;
 धुणांति पावाइं, पूरे करुइं, नवाइं पावाइं नते करेति. ॥ ६८ ॥
 स उवसंता अममा अकिंचणा, सविझ विझाण्णुगया जसंसिणो
 उउप्पसन्ने विमलेव चंदिमा, सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो
 त्तिवेमि ॥ ६९ ॥ इति धम्मन्तकामऽझयणं सम्मत्तं ॥ ७० ॥

चउन्हं खलु जासाणं, परिसंखाय पन्नावं; दोन्हं तु विणयं
 शिस्के, दो नजासेञ्च सबसो ॥ १ ॥ जा य सच्चा अवत्तवा,
 सच्चामोसा य जामोसा; जाय बुद्धेहिं नाइन्ना, न तं जासिञ्च
 पन्नवं ॥ २ ॥ असच्चं मोसं सच्चं च, अणवञ्चमककसं; समुप्पेह
 मसंदिठं, गिरंजासेञ्च पन्नवं ॥ ३ ॥ एयंच अठमन्नंवा; जं तु
 नामेइ सासयं; स जासं सच्चमोसंपि, तंपिधीरो वि वञ्चए ॥ ४ ॥
 वितहंपि तहा मुत्तिं, जंगिरं जासए नरो; तम्हा सो पुत्तो पावे-
 णं; किंपुणजो मुसंवए ॥ ५ ॥ तम्हा गह्वा मो वखामो अमुगं
 वाणि जविस्सइ; अहं वाणंकरि स्सामि, एसो वा णं करिस्सइ
 ॥ ६ ॥ एवमाइउ जा जासा, एस काळंमि संकिया; संपयाइय-
 मठेवा, तं पि धीरो विवच्चए ॥ ७ ॥ अइयंमि य काळंमि, पञ्चु
 पन्नमणागए; जं मठं तु नजाणेइत्ता, एमवेयंति नोवए ॥ ८ ॥
 अइयंमिय काळंमि, पञ्चुप्पन्नमणागए; जह्वा संका जवे तंतु,
 एव मेयंति नोवए ॥ ९ ॥ अइयं मिय काळंमि, पञ्चुप्पन्न मणा-
 गए; निस्संकियं जवे जंतु, एवमेयंति निहिसे ॥ १० ॥ तहेव
 फरुसा जासा, गुरु जुउ वघाइणी; सच्चाऽविसा नवत्तवा, जउ
 पावस्स आगउ ॥ ११ ॥ तहेव काणंकाणेत्ति, पंरुगं पंरुगे
 त्तिगा; वाहियंवाऽविरोगेत्ति, तेणंचोरेत्ति नोवए ॥ १२ ॥ ए ए
 णऽनेण अठेणं; परोजेणुवहम्मइ; आथार जाव दोसन्नं, न तं
 जासेच्च पन्नवं ॥ १३ ॥ तहेव होले गोलेत्ति, साण वा वसुलेतिय;
 दमए दुहए वावि, नेवं जासेऊ पन्नवं ॥ १४ ॥ अजिए पजिए
 वावि, अम्मो माउसिउत्तियं; पिठसिए जायणिउत्ति, धूए
 नतुणिय त्तिय ॥ १५ ॥ हल्लेहल्लत्ति अन्नत्ति, जट्टे सामिणि गोमि

णि; होले गोले वसुलेति, इन्नियं नेवमालवे ॥ १६ ॥ नामधि-
 द्येण णं बुया, इन्नीगुतेण वा पुणो; जहारिहम जिगिद्यं, आलवेद्य
 लविद्यवा ॥ १७ ॥ अद्यए पद्यए वावि, बप्पो चुद्धपिउति य;
 माउला ज्ञाणेज्जति, पुतेणदुणियत्तियं ॥ १८ ॥ हेहोहलेति
 अन्नेति, जट्टे सामिय गोमिय; होले गोले वसुले ति, पुरिसं नेव
 मालवे ॥ १९ ॥ नाम धिज्जेण णंबुया, पुरिस गुतेण वा पुणो;
 जहा रिहमज्जिगिझ, आलवेज्ज लवेज्जवा ॥ २० ॥ पंचिदियाण
 पाणाणं, एस इन्नी अय पुमं; जावणं नविजा णीजा, ताव जा-
 इति आलवे ॥ २१ ॥ तहेव माणुसं पसु, पस्किं वावि सरीसिवं;
 थुले पमेयले वद्ये, पाय मेतिय नोवए ॥ २२ ॥ परिवुद्धेति णं
 बुया; वूया उव चिएतियं; संजाए पीणीएवावि, महाकाएति,
 आलवे ॥ २३ ॥ तहेव गाउ दुश्चाउ, दम्मा गोरहगतिय; वा
 हिमा रहजोगति, नेवं ज्ञासेज्ज पन्नवं ॥ २४ ॥ जुवं गवेति णं
 बुया, धेणुं रस दयतियं; रहस्से महलए वावि, वए संवहणितिय
 ॥ २५ ॥ तहेव गंतु मुञ्जाणं, पवयाणि वणाणि य; रुखा महद्ध
 पेहाए, नेवं ज्ञासेज्ज पन्नवं ॥ २६ ॥ अलं पासाय खंजाणं, तो-
 रणाणि गिहाणि य; फल्लिहंगण नावाणं, अलं उदगदोणिणं
 ॥ २७ ॥ पीढए चंगबेरेय, नंगले मइयं सिया; जंत लठी व
 नाज्जिवा, गंभीया वा अलंसिया ॥ २८ ॥ आसणं सयणंजाणं,
 होश्चावा किंतुवस्सए; जुउ वघाइणी ज्ञासं, नेवं ज्ञासेज्ज पन्नवं
 ॥ २९ ॥ तहेव गंतुं मुञ्जाणं, पवयाणि वणाणिय; रुक्कामहद्ध
 पेहाए, एवं ज्ञासेज्ज पन्नवं ॥ ३० ॥ जाइमंता इमे रुक्का, दीह
 वट्टा महालया; पयाय सादावस्सिमा, वए दरिसणेति य ॥ ३१ ॥

तहा फलाइं पक्काइं, पाइ खद्याइं नोवए; वेलोइयाइं टालाइं,
वेहिमाइति नोवए ॥ ३२ ॥ असंथमा इमे अंबा, बहुनिंबनि-
मा फला; वएथ बहु संजूया, जूयरुवेत्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥ तहेवो-
सहिउं पक्काउ, नीद्वियाउ उवीइय; लाइमा ज्जिमाउत्ति, पि-
हुखज्जंति नोवए ॥ ३४ ॥ रुढा बहु संजूया, थिरा उसढाविय;
गध्रियाउ पसुयाउ, संसारा उत्ति आलवे ॥ ३५ ॥ तहेव संस्क-
रिंनच्चा, किच्चंज्जंति नोवए, तेणगं वावि वज्जिति, सुतिञ्चितिय
आवगा ॥ ३६ ॥ संस्कमिं संस्कमिंबुया, पणियठिति तेणगं; बहुसा-
माणि तिञ्जाणि, आवगाणं वियागरे ॥ ३७ ॥ तहा नइउं पुन्नाउ,
काय तिञ्जंति नोवए; नावाहिं तारिमाउत्ति, पाणी पिञ्जंति नोवए
॥ ३८ ॥ बहु वाहमा अगाहा, बहु सल्लिखु प्पिदोदगा; बहु वि,
ढमो दगायावि, एवं ज्ञासेस पन्नवं ॥ ३९ ॥ तहेव सावद्यं जोगं-
परस्सऽछाए निच्चियं, कीरमाणंति वा नच्चा; सावसं नलवे मुणी
॥ ४० ॥ सुकमेत्ति सुपक्केत्ति, सुञ्जिने सुहमे ममे; सुनिच्चिए
सुलचेत्ति, सावसं वसए मुणी ॥ ४१ ॥

(काव्यम्.)

पयत्ति पक्केत्ति व पक्कमालवे, पयत्ति ङ्गनेति व ङ्गिन्न माल-
वे; पयत्ति लचेत्ति व कम्महेउयं, पाहारगाढेत्ति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

सव्वुक्कसं परगधंवा, अउलं नञ्जिएरिसं; अवकीयं मवत्तवं, अवि-
यत्तं चेव नोवए ॥ ४३ ॥ सबमेयं, बइस्सामि सबमेयंति नोवए; अणुवी
य सब सबङ्ग, एवं ज्ञासेथ पन्नवं ॥ ४४ ॥ सुक्कियं वा सुविकीयं,
अक्कियं किच्चमेव वा; इमंगिहं इमंमुच्च, पणियं नोवियागरे ॥ ४५ ॥

अप्पये वा महग्घेवा, कएवा विकए वावि; पणिये समुप्पन्ने
 अणवञ्चं वियागरे ॥ ४६ ॥ तहेवासंजयं धीरो, आसएहिं करे-
 हिं वा; सयं चिठ वया हित्ति, नेवं चासेद्य पन्नवं ॥ ४७ ॥
 बहवे इमे असाहु, लोए बुच्चंति साहुणो; नलवे असाहु साहूत्ति,
 साहु साहूत्ति आलवे ॥ ४८ ॥ नाए दंसए संपन्नं, संजमे य
 तवेरय; एवं गुणसमाजत्तं, संजयं साहु मालवे ॥ ४९ ॥ देवाणं
 मणुयाणुंच, तिरियाणुंच बुग्गहे; अमुयाणं जठ होठ, मा वा
 होठत्ति नोवए ॥ ५० ॥ वाठ बुठंच सी उन्हं, खेम धायं सि-
 वंति वा; कयाणि हुज एयाणि, मा वा होठत्ति नोवए ॥ ५१ ॥

(काव्यम्.)

तहेव मेहं व नहंच माणवं, नदेवदेवेत्ति गिरं वएञ्जा;
 समुन्निए उन्नए वा पठए, वएञ्ज वा बुठ वदाहएत्ति ॥ ५२ ॥

(अनुब्बुवृत्तम्)

अंतद्विस्केत्तिणं बुया, गुञ्जाणु चरियंत्तिया; रिद्धिमंतं
 नरं दिस्स, रिद्धिमंतंति आलवे ॥ ५३ ॥

(काव्यम्.)

तहेव सावञ्जाणु मोयणी गिरा, उहारिणी जाय परोव-
 धायणी; से कोह लोह जय हास माणवा, नहासमाणोवि गिरं
 वएञ्जा ॥ ५४ ॥ सुबक्क सुद्धिं समुपेहिया मुणी, गिरं च दुठं
 परिवञ्जए सया; मियं अदुठं अणुवीय चासए, सयाण मञ्जे
 लहई पसंसणं ॥ ५५ ॥ चासाइ दोसेय गुणे य जाणिया, तीसे-
 य दुठे परिवञ्जए सया; ङसु संजए सामिणिए सया जए, वएञ्ज
 बुञ्जे हियमाणु लोमियं ॥ ५६ ॥ परिक्क चासी सुसमाहि इंदिए,

चउक्कसाया वंगए अणिसिए; स न्निधुणे धुन्न मलं पुरेकमं,
आराहए लोमणिं तहा परं तिबेमि ॥ ९७ ॥

इति सुवक्कवसुद्धीनामंऽध्वयण सप्तमं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

(अनुष्टुप्वृत्तम्.)

आयार पणिहिं लधुं, जहा कायव्व जिख्खुणो, तंजे उदा
हरिस्सामि, आणुपुविं सुणेह मे ॥ १ ॥ पुढवि दग अगणि
मारुय, तण रुक्कस्स बीयगा; तस्सा य पाणा जीवत्ति इइ वुत्तं
महेसिणा ॥ २ ॥ तेसिं अन्नण जोएणं, निच्चं हीयवयं सया;
मणसा काय वक्केणं, एवं जवइ संजए ॥ ३ ॥ पुढवि जितिं
सिदंल्लेलुं, नेवजिंदे नसंदिहे, तिविहेण करण जोएणं, संजया
सुसमाहिया ॥ ४ ॥ सुद्ध पुढवीए न निस्सिए, ससरुक्कंमि य
आसणे, पमझितु निसीएञ्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥ ५ ॥
सीउदगं नसेवेद्या, सिद्धावुचं हिमाणिय, उसिणोदगं तत फा-
सुयं, पग्गिहाहिच्च संजए. ॥ ६ ॥ उदउद्धं अप्पणो कायं, नेव
पुढे नसंदिहे, समुप्पेह तहाज्जयं, नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगाळं अगणिं अच्चिं, अत्तायं वा सजोइयं, न उंजेञ्जा नघट्टे-
ञ्जा, नोणंनिव्वा वए मुणी ॥ ८ ॥ ताद्धि यंटेण पत्तेणं, साहा
विहुयणेण वा; नवीएच्च अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पुग्गळं
॥ ९ ॥ तणरुक्कं नञ्चिदेञ्जा, फळंमूळं व कस्सइ; आमगं विविहं
बीयं, मणसावि नपन्नए ॥ १० ॥ गहणेसु नचिठेद्या, वीएसु
हरिएसु वा; उदगंमि तहा निच्चं, उत्तिंग पणगेसु वा ॥ ११ ॥
तस्से पाणे नहिंसेद्या, वाया अट्टव कम्मणा; उवरउ सब ज्जएसु

पासेञ्ज विविहं जगं ॥ १२ ॥ अठ सुहमाइं पेहाए, जाइ जा-
 णितु संजए; दया हिगारी जूएसु, आस चिठ सएहिं वा ॥ १३ ॥
 कयराइं अठ सुहमाइं, जाइं पुढेद्य संजए; इमाइं ताइं मेहावी,
 आइरकेञ्ज वियरकणो ॥ १४ ॥ सिणेहिं पुप्फ सुहुमं च, पाणु-
 तिग तहे वय; पणगं वीयं हरियंच, अंरुसुहमं च अठमं ॥ १५ ॥
 एवमेयाणि जाणित्ता, सब जावे ण संजए; अप्पमतो जइ निच्चं,
 सबिंदिय समाहिए ॥ १६ ॥ धुवंच पन्निवेहेञ्जा; जोगसा पाय
 कंवलं; सेद्य मुच्चार जूमिंच, संथारं अटुवासणं ॥ १७ ॥ उच्चारं
 पासवणं, खेव सिंधाण जद्धियं, फासुयं पहिलेहिद्या, परिठा-
 वेद्य संजए ॥ १८ ॥ पविसितु परागारं, पाण्ठा ज्ञोयणस्स वा;
 जयं चिठे मियं ज्ञासे, न य रूवेसु मणं करे ॥ १९ ॥ बहु सु-
 णेहिं कन्नेहिं, बहु इत्थीहिं पिन्ने; न य दिठं सुयं सबं, जिख्वु
 अरकाळमरिहइ ॥ २० ॥ सुइं वा जइ वादिठं, नलवेज्जो वघाइं
 यं; नय केण उवाएणं, गिहि जोगं समायरे ॥ २१ ॥ निघाणं
 रस निजुठं, जइगं पावगंतिवा; पुठो वावि अपुठो वा, लाजा-
 ऽलाजं न निहिसे ॥ २२ ॥ नय ज्ञोयणंमि गिञ्जो, चरे उच्चं
 अयंपिरो; अफासुयं न जुंझेञ्जा, किय मुद्देसिया हं ॥ २३ ॥
 संनिहं च नकुवेद्या, अणुमायंपि संजए; मुहाजीवी असंबुद्धो,
 हविञ्ज जग निस्सिए ॥ २४ ॥ लुहवित्तीसु संतुठे, अप्पिन्ने
 सुहरे सिया; आसुरुत्तं नगन्नेद्या, सुच्चारं जिण सासणं ॥ २५ ॥
 कन्नं सोरकेहिं सद्देहिं, पेमंनान्निनिवेसए; दारुणं कक्कसं फासं,
 काएण अहियासए ॥ २६ ॥ रूखुहं पिवासं दुसेद्यं, सी उन्हं
 अरइ जयं; अहियासे अबहिठं, देहडुक्कं महा फलं ॥ २७ ॥

अन्नगंयंमि आइच्चे, पुरन्नाय अणुगए; आहार माइयं सबं, मण
 सावि न पढए ॥ १७ ॥ अतितणे अचवले, अप्प चासी मिया-
 सणे; ह्वेस्स उयरे दंते, ओवं लद्धु नखिसए ॥ १८ ॥ नयबाहरं
 परिचवे, अत्ताणं नसमुक्कसे; सुय लात्ते नमजेश्सा, जच्चा तवस्सी
 बुद्धिए ॥ ३० ॥ से जाण मजाणं वा, कट्टु अहम्मियं पयं; सं-
 वरे खिप्पमप्पाणं, वीइयंतं नसमायरे ॥ ३१ ॥ अणायारं पर-
 कम्म, नेव गुहे ननिन्हवे, सुइसया वियरुत्तावे, असंसत्ते जिइ-
 दिए ॥ ३२ ॥ अमोहं वयणं कुष्सा, आयरियस्स महप्पणो, तं
 परिगित्त वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥ अधुवं जीवि-
 यं नच्चा, सिद्धिमगं वियाणिया, विणियट्ठिस्स जोगेसु, आउ
 परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥ बलं आमं च पेहाए, सद्दामारोग
 मप्पणो, खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजइ ॥ ३५ ॥
 जरा जाव नपीमेइ, वाहीजाव नवड्ढइ; जाव्विदिया नहायंति,
 तावधम्मं समायरे ॥ ३६ ॥ कोहं माणं च मायं च, लोचं च पाव
 वड्ढणं; वमे चत्तारि दोसाउं; इत्तं तो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥ कोहो
 पीइं पणासेइ; माणो विणय नासणो; माया मित्ताणि नासेइ,
 लोचो सब्ब विणासणो ॥ ३८ ॥ उवसमेण हणेकोहं माणं म-
 हवया जिणे, मायं च ऽ झव चावेणं, लोचो संतोसउ जिणे ॥ ३९ ॥

(काव्यम्.)

कोहोय माणोय अणिग्गहिया, माया य लोचो य पव-
 ढ्ढमाणा, चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचिंति मुदाइं पुणो
 चवस्स ॥ ४० ॥ राइणिएसु विणयं पउंजे, धुव सीलयं सययं नहाव-
 एस्स; कुमुव अट्ठीण पट्ठीण गुत्तो, परक्कमेस्सा तव संजमंमि ॥ ४१ ॥

(अनुष्टुबृत्तम्)

निहंच न बहु मन्नेद्या, सप्पहासं विवद्यए; मिहो कहाहिं
 नरमे, सद्यायंमि रउ सया ॥ ४१ ॥ जोगं च समण धम्मंमि,
 जुंजे अनलसो धुवं; जुत्तोय समण धम्मंमि अठं लहइ अणु-
 त्तरं ॥ ४२ ॥ इह लोग पारत्त हियं, जेणं गल्लइ सुग्गइ; बहु
 स्सुयं पङ्कुवा सिद्या, पुण्णेद्यड्ढ विणिन्नियं ॥ ४४ ॥ हत्तं पायं
 च कायंच, पण्णिहाय जिइंदिए; अट्ठीण गुत्तो निसिए, सगासे
 गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥ नपरकउ नपुरउं, नेवकिच्चाण पिठउं;
 नयउरं समासेद्या चिठेञ्जा गुरुणंत्तिए ॥ ४६ ॥ अपुत्तिउं न-
 चासेद्या, चासमाणस्स अंतरा; पिठि मंसं नखाएद्या, माया
 मोसं विवझए ॥ ४७ ॥ अपत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेद्य वा
 परो, सव्वसो तं नचासेद्या, चासं अहिय गामिणिं ॥ ४८ ॥
 दिठं मियं असंदिद्धं, पन्निपुन्नं वियं, जियं, अयं पिर मणु वि-
 गं, चासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥ आयार पन्नतिं धरं दिठि-
 वायमडहिद्यगं, वयं विखलियं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
 नरकत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मत्त जेसद्यं; गिहिणो तं न आ
 इस्के, ज्ञयाडहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥ अन्नठं पगरं लयणं, ज-
 एद्य सयणासणं; उच्चारजू मि संपन्नं, इत्ति पसु विवझियं ॥ ५२ ॥
 विवित्ताय जवे सिद्या, नारीणं नलवे कहं; गिहि संथवं नि-
 कुञ्जा, कुञ्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥ जहा कुकुरु पोयस्स,
 निच्चं कुललउ जयं; एवं खकु बंजयारिस्स, इत्ती विग्गहउं जयं
 ॥ ५४ ॥ चित्तजितिं न निञ्जाए, नारिं वा सु अलंकियं जरकरं
 पिव दहूणं, दिठिं पन्नि समाहरे ॥ ५५ ॥ हत्तं पाय पन्निन्नं

कन्नं नासवि कप्पियं; अवि वाससयं नारि, बंजयारी विवच्चए,
 ॥ ५६ ॥ विञ्जसा इच्छि संसग्गी, पणियंरस ज्ञोयणं; नरस्सत्त-
 गवेसिस्स, विसं ताद्वउरुं जहा ॥ ५७ ॥ अंगं पच्चंग संघाणं
 चारुद्धविय पेहियं; इत्थीणं तं न निञ्जाए, कामराग विवद्धणं
 ॥ ५८ ॥ विसएसु मणुत्तेसु; पेमं नाऽज्जिनिवेसए; अण्णिच्चं तेसिं
 विन्नाय, परिणामं पुग्गत्ताणय ॥ ५९ ॥ पुग्गत्ताणं परिणामं
 तेसिं नच्चा जहा तहा; विणीय तन्हा विहरे, सीञ्चूएण अप्प
 णो ॥ ६० ॥ जाए सञ्जाए निस्कंतो, परियाय चाण मुत्तमं
 तमेव अणुपावेत्था, गुण आयरिय सम्मए ॥ ६१ ॥

(काव्यम्.)

तवंचिमं संजम जोगयं च, सद्यायजोगं च सया अहि-
 ष्टिए, सुरेव सेणाए समत्तमाउहे, अद्वमप्पणो होइ अद्वंपरेसिं
 ॥ ६२ ॥ सद्याय सु जाणरयस्स ताइणो, अप्पाव जावस्स
 तवे रयस्स; विसुञ्जइ जंसि मवं पुरे करुं, समीरियं रूप्प मवं
 व जोइणा ॥ ६३ ॥ से तारिसे दुक्क सहे जिइंजिए, सुएणजुत्ते
 अममे अकिंवाणे; विरायइ कम्म घणंमि अवगए, कसिणब्ज
 पुत्तावगमेव चंदिमे त्तिवेमि ॥ ६४ ॥
 इति आचार पण्हिं नाम अठमञ्जयण सम्मत्तं ॥ ८ ॥

(काव्यम्.)

अंजा व कोहा व मय प्पमाया, गुरुसगासे विणयं न सि-
 र्के; सो चेव उ तस्स अञ्चूइ जावो, फलंव कीयस्स वहाय
 होइ ॥ १ ॥ जेयावि मंदेत्ति गुरु विइत्ता, रुहरे इमे अप्प सुए-

त्ति नच्चा; हीलंति मिहं, पन्निवञ्जमाणा करंति आसायण ते
 गुरुणं ॥ २ ॥ पगइए मंदावि जवंतिएगे, रुहरावि य जे सुय-
 बुद्धो ववेया; आयार मंता गुण सुचि अपा, जेहीलिया सिहि-
 रिव ज्ञासकुद्या ॥ ३ ॥ जेयावि नागं रुहरंति नच्चा, आसायए
 से अहियाय होइ; एवायरियंऽपि हु हील्यं तो, नियहइ जाइ
 पहं खु मंदो ॥ ४ ॥ आसी विसो वावि परं सुरुओ, किं जीव
 नासाउं परंतु कुझा; आयरिय पाया पुण अप्पसन्ना, अबोहि-
 यासायण नञ्चि मोस्को ॥ ५ ॥ जो पावगंजलिय मवक्कमेद्या
 आसी विसं वावि हु कोवएद्या; जो वा विसं खायइ जीवी
 यही, एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ६ ॥ सिया हु से पावए नो-
 रुहेझा, आसीविसो वा कुविज्ज न जरेके, सिया विसं हालहलं
 नमारे, नयावि मोस्को गुरु हीलणाए ॥ ७ ॥ जो पबयं सिरसा
 जितु मिह्णे, सुत्तं व सीहं पन्निबोहएद्या; जो वा दए सत्ति अग्गे
 पहारं, एसो वमासायणया गुरुणं ॥ ८ ॥ सिया हु सीसेण गिरं-
 पि जिंदे, सिया हु सीहो कुविज्ज न जरेके, सिया नजिंदेझव
 सत्तिअग्गं, नयावि मोस्को; गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥ आयरिय पाया
 पुण अप्पसन्ना; अबोहियासयण नञ्चिमोस्को; तम्हा अणावाह
 सुहा जिक्खी, गुरुप्पसायाज्जिमुहो रमेझा ॥ १० ॥ जहाहि-
 यग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुइ मंतपयाज्जिसित्तं; एवायरियं उव-
 चिठएझा; अणंतनाणो वगउं विसंतो ॥ ११ ॥ जस्संतिए धम्मप
 याइं सिखे, तस्संऽतिए विणइयं पउंजे; सक्कारए सिरसा पंज-
 लीउं, काय गिराज्जो मणसाय निच्चं ॥ १२ ॥ लझा दया संजम
 वंजच्चेरं, कल्लाण जागीस्स विसोही चाणं, जे मे गुरु सययं अ-

णुसासयंति, तेहं गुरु सययं पूययामि ॥ १३ ॥ जहा निसंते
 तव निच्चमाली, पचासइ केवल चारहंतु; एवायरिउ सुय सील
 बुद्धिए, विरायइ सुरमझेव इंदो ॥ १४ ॥ जहा ससी कोमुइ
 जोग जुत्तो, नरकत्त तारागण परिवुरुप्पा; खे सोहइ विमले
 अब्जमुक्के; एवं गणी सोहइ जिख्खूमच्चै ॥ १५ ॥ महागरा आ-
 यरिया महेसी, समाहिं जोगे सुयसील बुद्धिए; संपाविउ काम
 अणुत्तराइं, आराहए तोसइ धम्मकामी ॥ १६ ॥ सोच्चाण
 मेहावी सुजासियाइं; सुस्सुसए आयरियमप्पमत्तो; आराहइ-
 त्ताण गुणे अणेगे, से पावइ सिद्धि मणुत्तरं त्तिवेमि ॥ १७ ॥
 इति विणयसमाहीच्चयणं पढमं उद्देशो समत्तो ॥ १ ॥

(काव्यम्.)

मूलाउ स्कंधप्पजवो दुमस्स, खंधाउ पत्ता समुवेंति साहा;
 साह प्पसाहा विरुहंति पत्ता, तउ से पुप्फं च फल रसोय ॥ १ ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

एवं धम्मस्स, विणउं, मूलं परमो से मोस्को; जेण कित्तिं
 सुयं सिग्घं, निस्सेसं चाज्जिगब्बइ ॥ १ ॥ जे य चंमे मिए थच्चे,
 दुवाइ नियमी सद्धे; वुझइ से अविणीयप्पा, कच्छसोयं गयं जहा
 ॥ ३ ॥ विणयंपि जो उवाएणं जोइउ कुप्पइ नरो; दिवं सो
 सिरि मिच्चंति, दंमेणं पस्सिसेहए ॥ ४ ॥ तहेव अविणीयप्पा,
 उववञ्जा हया गया; दीसंति दुहमेहंता, आज्जिगमुवचीया
 ॥ ५ ॥ तहेव सुविणीयप्पा, उववच्चा हया गया; दीसंति सुह-
 मेहंता, इद्धिपत्ता महायसा ॥ ६ ॥ तहेव अविणीयप्पाळोगं-
 सि नर नारिउं; दीसंति दुहमेहंता, ज्ञायाते विगळिं, दिया

॥ ७ ॥ दंभसन्न परिजुन्ना; असन्न वयणेहि य; कलुणा विवन्न
 हंदा, खुप्पिवासा परिगया ॥ ८ ॥ तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि
 नर नारिउं; दीसंति सुहमेहंता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा, देवा जरकाय गुञ्जगा; दीसंति दुह मेहंता;
 आज्जिउग मुवट्ठिया ॥ १० ॥ तहेव सुविणीयप्पा, देवा जरका-
 य गुञ्जगा; दीसंति सुहमेहंता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आयरिय उवञ्जायाणं, सूस्सुसा वयणं कराः तेसिं सिस्का
 पवट्ठंति जल्ल सित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥ अप्पण्णा परावा
 सिप्पा णेउणियाणियं; गिहिणो उवज्जोगा, इह लोगस्स का-
 रणा ॥ १३ ॥ जेण बंध वहं घोर, परियावं च दारुणा; सिस्का-
 माणा नियड्ढंति, जुत्ता ते लल्लिइंदिया ॥ १४ ॥ तेवि तं गुरुं
 पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा; सक्कारंति नमंसंति, तुचा निदे-
 सवत्तिणो ॥ १५ ॥ किंपुणजो सुयगाही; अणंत हिय कामए;
 आयरिया जं वए जिख्खू, तम्हा तं न्नाइवत्तए ॥ १६ ॥ नियं-
 सिञ्जं गइछाणं, नियंच आसणाणिय; नीयंच पाए वंदेज्जा नियं
 कुञ्जाय अंजलिं ॥ १७ ॥ संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि-
 खमेह अवराहं मे, वएऊ न पुणोत्तिय ॥ १८ ॥ दुग्गउं वा
 पउएणं, चोइउं वहइ रहं; एवं दुबुद्धि किञ्चाणं वुत्तोवुत्तो पकु-
 वइ ॥ १९ ॥ आलवंते लवंतेवा न निसिज्जाए पन्निमुणे; मूतूण
 आसणं धीरो, सुस्सुसाए पन्निमुणे ॥ २० ॥ काळं हंदा वयारंच,
 पन्निदेहित्ताण हेऊहिं; तेणंतेणं ऊवाएहिं, तंतंसंपन्निवायए
 ॥ २१ ॥ विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य; जस्सेयं
 दुहउं नायं, शिरकंसे अज्जिगन्नइ ॥ २२ ॥

(काव्यम्.)

जेयावि चंमे मइ इड्ढि गारवे, पिशुणे नरे साहस हीणपे-
सणे; अदिठ धम्मे विणए अकोविए, असंविजागी न हु तस्स
मोस्को ॥ २३ ॥ निहेसवित्ती पुण जे गुरुणं, सुयत्त धम्मा वि-
णयंमि कोविया; तरितु ते उंघमिणं डुरुत्तरं, खवितु कम्मं गइ
मुत्तमं गयं त्तिवेमि ॥ २४ ॥ इति विणसमाहीनामं, अयणं
वीउउहेसो सम्मत्तं ॥ २ ॥

(काव्यम्.)

आयरियग्गिमिवाहि यग्गी, सुस्सू समाणो पफिजागरेत्था;
आलोइय इंगिय मेव नच्चा, जो त्ठंद माराहयइ स पुञ्जो ॥ १ ॥
आयारमचा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिञ्ज वक्कं, जहो-
वइठं अज्जिकंखमाणो, गुरु तु नासायइ स पुञ्जो ॥ २ ॥ राय-
णिएसु विणयं पउंजे, रुहरावि य जे परियाय जेठा, नियत्तणे
वट्टइ सच्चवाइ, उवायवं वक्ककरे स पुञ्जो ॥ ३ ॥ अन्नाय उंठं
चरइ विसुअं, जवणछया समुयाणं च निचं; अलअयं नोपरि-
देवएत्था, लद्धं न विकत्तइ स पुञ्जो ॥ ४ ॥ संथार सिञ्जासण
जत्तपाणे, अप्पिण्ठया अइ दाजेवि संते; जो एव मप्पाण जितो-
सएजा, संतोस पाहंन रए स पुजो ॥ ५ ॥ सक्का सहेजं आसाए
कंटया, अउमया उत्तहयानरेणं; अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
वइमए कन्न सरे स पुजो ॥ ६ ॥ मुहुत्त डुस्का उ हवंति कंटया,
अउमया तेवि तउ सुउअरा; वाया डुरुत्ताणि डुरुअराणि, वेराणु
बंधाणि महवज्जयाणि ॥ ७ ॥ समावयंतावयणा जिघाया; कन्नंगया
डुम्मणियं जणंति; धम्मोत्तिकिच्चा परमग्ग सूरे, जिइदिए जो सहइ
सपुजो ॥ ८ ॥ अवन्नवायं च परं मुहस्स, पच्चरकउ पफिणीयंच

जासं; उहारिणीं अप्पिय कारिणिंच, जासं नजासेञ्च सयास
 पुज्जो ॥ ९ ॥ अलोलुए अकुहए अमाइ, अपिसुणे यावि अ-
 दीणवित्ती; नोजावए नोविय जावियप्पा, अकोउहद्धे य सया
 स पुज्जो ॥ १० ॥ गुणेंहिं साहू अगुणेहिंऽसाहू, गिन्हाहिं साहू
 गुण मुच्चऽसाहू; वियाणिया अप्पगमप्पएणं, जो रागदोसेहिं
 समो स पुज्जो ॥ ११ ॥ तहेव रुहरं च महद्धगं वा, इब्बी पुमं
 पवइयं गिहं वा; नोहीलए नोविय र्किंसएद्या, अंजंच कोहंच
 चए स पूज्जो ॥ १२ ॥ जे माणिया सययं माणयंति, जुत्तेण कञ्चं
 निवेसयंति; ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्च
 रए स पुज्जो ॥ १३ ॥ तेसिं गुरुणं गुणसागराणं, सुच्चाए मे-
 हावी सुजासियाइं; चरे मुणी पंच रए त्तिगुत्तो, चउकसायाव-
 गए स पुज्जो ॥ १४ ॥ गुरु मिह सययं पक्खियरिय मुणी, जिण-
 मय निउणे अज्जिगम कुसले, धुणिय रयमलं पुरेकरं, चासुर
 मउलं गयं गय तिवेमि ॥ १५ ॥

॥ इति विणय समाही तइउ उहेसो सम्मत्तं ॥

(गद्यम्)

सुयं मे आउसं तेणं जगवया एव मस्कायं इह खलु
 थेरेहिं जगवंतेहिं चत्तारि विणय समाही ढाणा; पन्नता कयरे
 खलु ते थेरेहिं जगवंतेहिं चत्तारि विणय समाही ढाणा, पन्न-
 ता इमे खलु तेथेरेहिं जगवंतेहिं चत्तारि विणय समाही ढाणा
 पन्नत्ता तं जहा; विणय समाही १ सुय समाही २ तव समा
 ही ३ आयार समाही ४ विणए १ सुय २ तवेय ३ आयारें
 ४ निच्चं पंक्खिया अज्जिरामयंति अप्पाणं जे जवंति जिइंदिया
 चउविहा खलु विणय समाही जवइ तंजहा अणुसासिच्चंतो

सुस्सूसइ १ समं संपक्खिञ्जइ २ वेयमाराहइ ३ न य जवइ अ-
त्तसंपग्गहि ए ४ चउत्तं पयं जवइ जवइ यइत्तं सिलोगो ॥

(काव्यम्.)

पेहेइ हियाणु, सासणं, सुस्सूसइ तंचपूणो अ हिछए, न
य माण मएण मच्चइ, विणय समाही आ य अछिए ॥ १ ॥
चउविहा खलु सुय समाही जवइ तंजहा सुयंमे जविस्स इत्ति
अद्याइयद्यं जवइ एगग्गाचित्तो जविस्सा मित्ति अद्याइयवं जवइ
अप्पाणं ठावइस्सा मित्ति अद्याइयवं जवइ ठिउ परं ठाव
इस्सा मित्ती अझाइयवं जवइ चउत्तं पयं जवइ जवइ य इत्तं
सिलोगो, नाणमेग्ग चित्तोय ठिउ ठावइए परं सुयाणिय अ-
हिज्जित्ता रउ सुयसमाहिए २ चउविहाखलु तवसमाही जवइ
तंजहा नोइहल्लोग ठयाए तवमहिछेद्या नोपरल्लोगछयाए तवम-
हिछेद्या नोकित्ति वन्न सह सिल्लोगछयाए तवमहिछेद्या नन्नत्तं
निश्सरठयाए तवमहिछेद्या चउत्तं पयं जवइ जवइ यइत्तं सिलोगो ।

(काव्यम्.)

विविह गुण तवोरए निच्चं, जवइ निरासए निच्चरछिए
तवस्सा धुणइ पुराण पावगं, जुत्तो य सया तव समाहीए
॥ २ ॥ चउविहा खलु आयारसमाही जवइ तंजहा नोइहल्लो-
गछयाए आयारमहिछेद्या नोपर ल्लोगछयाए आयारमहिछेद्या
नोकित्ति वन्न सह सिल्लोगछयाए आयारम हिछेद्या नन्नत्तं अ-
रिहंतेहिं हेज्जहिं आयारमहिछेद्या चउत्तं पयं जवइर य इत्तं
सिल्लोगो ॥

(४३)

(काव्यम्.)

जिण वयण रए अतिंतिणे, पन्निपुन्नायय मायय छिए;
आयार समाही संबुणे, जवइय दंते जाव संधए ॥ ४ ॥

(काव्यम्.)

अजिगम चउरो समाहीउं, सु विसुओ सुसमा हियप्पउं;
विउवहिय सुहावहं पुणो, कुवइ सो पयकेम मप्पणो ॥ ५ ॥
जाइ मरणाउ मुच्चइ, इच्चं च चयइ सव्यसो; सिद्धे वा हवइ
सासए, देवे वा अप्प रए महिद्धिए त्तिवेमि ॥ ६ ॥ इति विण-
यसमाही चउवो उद्देशो नवमंश्रयणंसम्मत्तं ॥ ५ ॥

(काव्यम्.)

निस्कममाणाइय बुद्ध वयणे, निच्चं चित्तसमाहिज्ज
हवेद्या; इच्छीण वसं नयावि गत्ते, वंतं नोपन्नि यायइ जे स जि-
ख्खू ॥ १ ॥ पुढवि न रकणे न रकणावए, सीउदगं नपिवे
नपीया वए; अगणि सच्च जहा सुनिसियं, तं नजले नजलावए
जे स जिख्खू ॥ २ ॥ अनिलेण नवीए नवीयावए; हरियाणि
नञ्चिंदे नञ्चिंदावए. वीयाणि सया विवच्चयंतो, सचित्तं नाहा-
रए जे स जिख्खू ॥ ३ ॥ वहणं तस्स आवराणं होइ. पुढवि
तण कठ निसियाणं, तम्हा उद्देशियं न जुंश्चे, नोवि पए
नपयावए जे स जिख्खू ॥ ४ ॥ रोइय नाय पुत्त वयणे अत्त-
समे मन्नेश्च ढप्पिकाए; पंचेय फासे महव्वयाइं. पंचासव्व संव-
रेय जे स जिख्खू ॥ ५ ॥ चत्तारि वमे सया कसाए, धुव जो-
गो हवेद्य बुद्ध वयणे; अहणे निञ्जाय रूव रयए, गिहि जोगं
परिवश्च ए जे स जिख्खू ॥ ६ ॥ सम्मदिठी सया अमुढे, अ-

ङिहु नाणे तव संजमे य; तवसा धुणइ पुराण पावगं, मण वय
 काय सुसंबुमे जे स जिख्खू ॥ ७ ॥ तहेव असणं पाणगं वा,
 विविहं खाइमं साइमं लजित्ता; होही अचोसुए परेवा तं न
 निहे न निहावए जे स जिख्खू ॥ ८ ॥ तहेव असणं पाणगं
 वा, विविहं खाइमं साइमं लजित्ता; ङंदिय साहमियाणं चुंजे,
 जोच्चा सद्याय रए य जे स जिख्खू ॥ ९ ॥ नय बुग्गहियंकहं
 कहेद्या, नय कुप्पेनिहु इंदिए पसंते, संजम धुव जोग जुत्ते,
 उवसंते अविहेरए जे स जिख्खू ॥ १० ॥ जो सहइ हू गाम
 कंटए, अक्कोस पहार तद्यणाउ य; जयजेरवासइ सप्पहासे,
 सम सुह डुरक सहेअ जेस जिख्खू ॥ ११ ॥ पन्निमं पन्निवस्त्रिया
 मसाणे; नोजीयए जेरवाइदियस्स; विविह गुण तवो रए निच्चं
 नसरीरचाजिकंखए जे स जिख्खू ॥ १२ ॥ असइ वोसठ
 चित्त देहे, अक्कुछेवहए व लुसिएवा; पुढवीसमे मुणी हवेद्या,
 अनियाणे अकोहलेय जे स जिख्खू ॥ १३ ॥ अजिचूय काए-
 ण परिसहाइं, समुद्धरे जाइ पहाउ अप्पयं; विइत्तु जाइ मरणं
 महप्रयं, तवे रए सामणिए जे स जिख्खू ॥ १४ ॥ हत्त संजए,
 पाय संजए, वाय संजए संजए इंदियस्स; अशप्प रए सु स-
 माही यप्पा, सुत्तं च वियाणइ जे स जिख्खू ॥ १५ ॥ उव-
 हिमि अमुत्तिए अगिद्धे, अज्जाय उंत्तं पुत्तापिपुत्ताए; कय विककय
 संनिहि उवरए, सबसंभाअगएय जे स जिख्खू ॥ १६ ॥ अलो-
 लुं जिख्खू नरसेसु गिद्धे, उंत्तं चरे जीवियं नाजिकंखी; इद्धिच
 सक्कारणं पुयणंच, चए चियप्पा अणिए जे स जिख्खू ॥ १७ ॥
 नपरं वएशासि अयं कुसीले; जेणंनोक्कुप्पिअ नत्तं वएशा; जा-

णिय पत्तेय पुन्न पावं, अत्ताणं नसमुक्कसे जे स ज्जिख्खू ॥ १७ ॥
न जाइ मत्तेनय रूव मत्ते, नत्ताज्जमत्ते न सुएण मत्ते; मयाणि
सत्ताणि विवच्चयंतो, धम्मञ्जाण रएय जे स ज्जिख्खू ॥ १८ ॥
पवेयए अज्ञपयं महामुणी, धम्मे ठिठं छावयइ परंपि; निक्कम्म
वञ्जेञ्ज कुसील्लिङ्ग, नयावि हासं कुहए जेस ज्जिख्खू ॥ १९ ॥
तं देहवासं असुइ असासयं, सया चए निच्च हिय ठियप्पा;
त्तिदिंतुं जाइ मरणस्स बंधणं, उवेइ ज्जिख्खू अपुणागमं गइ
त्तिवेमि ॥ २० ॥ इति ज्जिख्खू नामं दसमच्चयणं संपूर्णं दस
वैकालिक सूत्र समाप्तं ॥



श्री सुधर्म गणधर प्रणीत
वीरस्तुति
(सूयगड अ० ६ चो)
(काव्यम्.)

पुञ्जिस्सुणं समणामाहणा य, अगारिणोया परतिञ्जिया य ॥
से केइणेगंत-हियधम्ममाहु, अणे विसं साहुसमिक्कयाए ॥ १ ॥
कहं च नाणं कहं दंसणं से, सीलं कहं नायसुयस्स आसी ॥
जाणासिणं जिखु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहाणिसंतं ॥ २ ॥
खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी ॥ जस-
स्सिणो चख्खुपहृत्थियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहा ॥ ३ ॥
उहं अहेयं तिरियं दिसा सु, तसा य जे आवर जेय पाणा ॥
से णिच्चणिच्चेहिं समिक्क पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥
सेसव्वदंसी अज्जिज्जयनाणि, खिरामगंधे धिइमं तिअप्पा ॥ अणुत्तरे
सव्व जगंसिविज्जां, गंधा अतीते अज्जये अणाउ ॥ ५ ॥ से जूइ-
पन्ने अणिएअचारी. उहंतरे धीरे अणंतचख्खु ॥ अणुत्तरे त-
प्पइ सूरिएवा, वइरोयणिंदेव तमंपब्जासे ॥ ६ ॥ अणुत्तरं धम्म-
मिणं जिणाणं, णेया मुणि कासव आसुपन्ने ॥ इंदेव देवाण
महाणुज्जावे, सहस्सणेता दिविणं विसिठे ॥ ७ ॥ से पन्नया अरकय
सागरेवा, महोदहिवावि अणंतपारे ॥ अणाइलेया अकसाइ जि-
ख्खु, सक्केव देवाहिवाइ उज्जुइमं ॥ ८ ॥ से वीरिएणं पन्निपुन्न
विरिए सुदंसणे वा णगसव्व सेठे ॥ सुरादएवासिमुदागरे
से, विरायएऽणोगगुणोववेए ॥ ९ ॥ सयंसहस्साणउ जोय-

णाणं, तिकंरुसे पंरुग वेजयंते ॥ से जोयणे णवणवई सहस्से,
 उद्धुस्सिउं हेठ सहस्समेगं ॥ १० ॥ पुठे णत्ते चिठइ चूमिव-
 ळिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ॥ से हेमवन्ने बहु नंदणे य,
 जंसि, रइं वेदयंति महिंदा ॥ ११ ॥ से पव्वए सह महप्पगासे,
 विरायइ कंचण मच्चन्ने ॥ अणुत्तरे गिरिसु य पव्वडुग्गे, गिरि-
 वरे से जल्लिएव जोमे ॥ १२ ॥ महीए मज्जंमि ठिए णगिंदे;
 पन्नायते सूरिय सुद्धसे ॥ एवं सिरिएउ स चूरिवन्ने, मणोरमे
 चोयइ अच्चिमात्ती ॥ १३ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स पवु-
 च्चई महतो पव्वयस्स ॥ एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाई जसो
 दंसण नाणसीत्ते ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा निसहाययाणं, रुयएव सेठेव
 लयायताणं ॥ तउवमे से जगचूइपन्ने, मुणीण मजे तमुदाहु पन्ने
 ॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्म-मुईरइत्ता, अणुत्तरं जाणवरं जियाई
 ॥ सुसुक्कसुकं अपगंरुसुकं, संखिंदुवेगंतवदातसुकं ॥ १६ ॥ अ-
 णुत्तरगं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ॥ सिद्धिगइं
 साइमाणंत पत्ते, नाणेण सीत्तेण य दंसणेणं ॥ १७ ॥ रुख्वेसु
 णाए जह सामत्तीवा, जस्सि रइं वेदयंति सुवन्ना ॥ वणेसुवा
 नंदणमाहुसेठं, नाणेण सीत्तेण य चूइपन्ने ॥ १८ ॥ अणियं व स-
 द्दाण अणुत्तरेउ, चंदोव ताराण महाणुत्तावे, गंधेसुवा चंदण-माहु
 सेठं, एवं मुणीणं अपरिन्न-माहु ॥ १९ ॥ जहा सयंचू उदहीण
 सेठे, नागेसुवा धराणिंदमाहु सेठे ॥ खउदएवा रसवेजयंते,
 तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥ २० ॥ हत्तिसु एरावण-माहु णाए,
 सीहो मियाणं सल्लिवा ण गंगा ॥ पत्खिसुवागुरुत्तेवेणु देवे, निव्वा
 णवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाए, जहवीससेणे पुफे

सुवा जह अरविंद-माहु ॥ खत्तीण सेठे जह दत्त वक्के, इसीण सेठे
तह वद्धमाणे ॥२१॥ दाणाण सेठं अजयप्पयहाणं, सच्चेसुवा अ-
णवज्जं वयंति ॥ तवे सुवा उत्तम वंजचेरं, लोगुत्तमे समणे
नायपुत्ते ॥ २३ ॥ ठिईण सेठा लवसत्तमावा, सजा सुहम्माव
सजाण सेठा ॥ णिवाणसेठा जह सबधम्मा, ण णायपुत्ता परम
ऽन्निनाणी ॥ २४ ॥ पुढोवमे धुणइविगयगेहि, न सखिहिं कुवइ
आसुपन्ने ॥ तरितु समुदं च महाजवोधं, अजयंकरे वीरे अणं-
तचख्खु ॥ २५ ॥ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोचं चउळं
अझ्जदोसा ॥ ए आणि वंता अरहामहेसी, ण कुवइ पाव ण
कारवेइ ॥ २६ ॥ किरियाकिरियं वेणइआणुवायं, अन्नाणियाणं
पन्नियच्च ठाणं ॥ से सबवायं इतिवेदइत्ता, उवच्छिण धम्म सदी-
हरायं ॥२७॥से वारिया इन्नि सराइत्तं उहाणवं दुस्सखयच्छयाए ॥
लोगं विदित्ता आरं पारं च, सबं पजू वारिय सव्ववारं ॥ २८ ॥
सोच्चा य धम्मं अरिहंतजासियं, समाहियं अठपठं विसुज्जं ॥ तं
सहहंता य जणा अणाउ, इंदेव देवाहिआगमिस्संति त्तिवेमि
॥ २९ ॥ इति समाप्तं.

नमिपवज्जा नवमं अध्ययनम्.

चइज्जण देवलोगाउ उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि । उव-
सन्तमोहणिज्जो सरई पोराणयं जायं ॥ १ ॥ जाइं सरित्तु जयवं
सहसबुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्तं उवेत्तु रज्जे अज्जिणिक्खमइ नमी
राया ॥ २ ॥ सोदेवलोगसरिसे अन्तेउरवरगउं वरे ज्ञोए । जु-
ञ्जित्तु नमी राया बुद्धो ज्ञोगे परिच्चयइ ॥३॥ महिलं सपुरजण-
वयं बलमोरोहं च परियणं सबं । चिच्चा अज्जिनिक्खन्तो एग-

न्तमहिच्छिउं जयवं ॥४॥ कोलाहलसंजूयं आसी महिलाए पव-
 यन्तम्मि । तइया रायरिसिम्मि नमिम्मि अज्जिणिकखमन्तम्मि
 ॥ ५ ॥ अब्भुठियं रायरिसिं पवजाठाणमुत्तमं । सक्को माहण-
 वेसेणं इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥ किण्णु जो अज्ज महिलाए को-
 लाहल्लगसंकुला । सुच्चन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य
 ॥७॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं नमी रायरिसी
 देवन्दं इणमब्बवी ॥ ८ ॥ महिलाए चेइए वञ्जे सीयञ्जाए मणोर-
 मे । पत्तपुप्फफलोवेए बहूणं बहुगुणे सया ॥ ९ ॥ वाएण हीर-
 माणंमि चेइयंमि मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता एए कन्द-
 न्ति जो खगा ॥ १० ॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइउं ।
 तउं नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥ एस अगरी
 य वाज्ज य एयं रुज्जइ मन्दिरं । जयवं अन्तेउरंतेणं कीसणं
 नावपिकखह ॥ १२ ॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइउं ।
 तउं नमी रायरिसि देवन्दं इणमब्बवी ॥ १३ ॥ सुहं वसामो
 जीवामो जेसि मो नत्थि किंचण । महिलाए रुज्जमाणीए न मे
 रुज्जइ किंचण ॥ १४ ॥ चत्तपुत्तकलत्तस्स निवावारस्स जिकखु-
 णो । पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जई ॥ १५ ॥
 बहु खु मुण्णिणो जहं अणगारस्स जिकखुणो । सबउं विप्पमुक्क-
 स्स एगन्तमाणुपस्सउं ॥ १६ ॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारण
 चोइउं । तउं नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥
 पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि य । उस्सूलगसयग्धीउं तउं
 गञ्जसि खत्तिया ॥ १८ ॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइउं
 । तउं नमी रायरिसी देवेन्दं इणमब्बवी ॥ १९ ॥ सअं नगरं

किञ्चा तवसंवरमग्लं । खन्तीनिजणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं
 ॥ २० ॥ धणुं परक्कमं किञ्चा जीवं च इरियं सया । धिइं च
 केयणं किञ्चा सच्चेण पत्तिमन्थए ॥ २१ ॥ तवनारायजुत्तेण
 त्तित्तुणं कम्मकञ्चुयं । मुणी विगयसंगामो ज्जवात्तं परिमुच्चइ
 ॥ २२ ॥ एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइत्तं तत्तं नमिं रायरिसिं
 देविन्दो इणमव्ववी ॥ २३ ॥ पासाए कारइत्ताणं वद्धमाणगि-
 हाणि य । वात्तग्गपोइयात्तं य तत्तं गह्वसि खत्तिया ॥ २४ ॥
 एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइत्तं । तत्तं नमी रायरिसी
 देवेन्दं इणमव्ववी ॥ २५ ॥ संसयं खलु सो कुण्णइ जो मग्गे
 कुण्णइ घरं । जत्थेव गन्तुमिञ्जेजा तत्थ कुवेज्ज सासयं ॥ २६ ॥
 एयमठं निसामित्ता हेज्जकारणचोइत्तं । तत्तं नमिं रायरिसिं दे-
 विन्दो इणमव्ववी ॥ २७ ॥ आमोसे दोमहारे य गणित्तेए य
 तक्करे । नगरस्स खेमं काज्जण तत्तं गह्वसि खत्तिया ॥ २८ ॥
 एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइत्तं । तत्तं नमी रायरिसी
 देवन्दं इणमव्ववी ॥ २९ ॥ असइं तुं मणुस्सेहिं मिन्ना दएओ
 पजुज्जइ । अकारिणोऽत्थ वज्जन्ति मुच्चइं कारत्तं जणो ॥ ३० ॥
 एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइत्तं । तत्तं नमि रायरिसि
 देविन्दो इणमव्ववी ॥ ३१ ॥ जे केइ पत्थिवा तुज्जं नानमन्ति
 नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताणं तत्तं गह्वसि खत्तिया ॥ ३२ ॥
 एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइत्तं । तत्तं नमी रायरिसी
 देवेन्दं इणमव्ववी ॥ ३३ ॥ जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए
 जिणे । एणं जिणेज्ज आपाणं एस से परमो जत्तं ॥ ३४ ॥ अप्पा-
 णमेव जुज्जहि किं ते जुजेण वज्जत्तं । अप्पाणमेवमप्पाणं जइत्ता

सुहमेहए ॥ ३५ ॥ पाञ्चन्द्रियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं-
 च । दुद्ययं चैव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥ एय-
 मठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं नमि रायरिसी देवि-
 न्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥ जइत्ता विउत्ते जस्से जोइत्ता समण-
 माहणे । दच्चा जोच्चा य जिठा य तउं गन्नसि खत्तिया ॥ ३८ ॥
 एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारण चोइउं । तउं नमी रायरिसी
 देवेन्दं इणमब्बवी ॥ ३९ ॥ जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे
 गवं दए । तस्सवि संजमो सेउं अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥
 एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं नमि रायरिसि
 देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥ घोरासमं चइत्ताणं अन्नं पत्थेसि
 आसमं । इहेव पोसहरउं जवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥ एय-
 मठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं नमी रायरिसी देवे-
 न्द इणमब्बवी ॥ ४३ ॥ मासे मासे तु जो बावो कुसग्गेण तु
 जुञ्जए । न सो सुयक्खा यस्स धम्मस्स कलं अग्घइ सोदासिं
 ॥ ४४ ॥ एयमठं मिसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं नमि
 रायरिसी देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥ हिरणं सुवणं मणि-
 मुत्तं कंसं दूसं च वाहणा । कोसं वट्ठावइत्ताणं तउं गन्नसि ख-
 त्तिया ॥ ४६ ॥ एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं । तउं
 नमी रायरिसी देवेन्दं इणमब्बवी ॥ ४७ ॥ सुवणरुप्पस्स उ
 पवथा जवे सिया हु केलाससमा असंखया । नरस्स लुज्जस्स न
 तेहिं किंचि इत्ता उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ४८ ॥ पुढवी
 सादी जवा चैव हिरणं पसुजिस्सह । परिपुणं नात्तमेगस्स इइ
 विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥ एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारणचोइउं ।

तत् नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥ अञ्जेरयम-
 ब्जुदए ज्ञोए चयसि पत्थिवा । असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण
 विहन्नसि ॥ ५१ ॥ एयमठं निसा मित्ता हेज्जकारण चोइत्तं ।
 तत् नमी रायरिसी देवेन्दो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥ सत्तं कामा
 विसं कामा कामा आसी विसोवमा । कामे य पत्थेमाणा अ-
 कामा जन्ति दोग्गई ॥ ५३ ॥ अहे वयइ कोहेणं माणेणं अह-
 माग्गई । माया गइपफिग्घात्तं लोत्तात्तं दुहत्तं जयं ॥ ५४ ॥
 अवज्जिज्जण माहणरूवं विज्जण विज्जण इन्दत्तं । वन्दइ अ-
 ज्जित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥ ५५ ॥ अहो ते निञ्चि-
 त्तं कोहो अहो माणो पराजित्तं । अहो ते निरक्किया माया
 अहो लोत्तो वसीकत्तं ॥ ५६ ॥ अहो ते अज्जवं साहु अहो ते
 साहु महवं । अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा
 ॥ ५७ ॥ इहं सि उत्तमो जन्ते पञ्चा होहिसि उत्तमो । लोगुत्त-
 मुत्तमं गाणं सिद्धिं गन्नसि नीरत्तं ॥ ५८ ॥ एवं अज्जित्थुणन्तो
 रायरिसि उत्तमाए सद्दाए । पायाहिणं करेन्तो पुणो पुणो वन्दई
 सक्को ॥ ५९ ॥ तो वन्दिज्जण पाए चङ्कसत्तक्खणे मुणिवरस्स ।
 आगासेऽणुप्पइत्तं लल्लियचत्तकुणरुत्ततिरीने ॥ ६० ॥ नमी
 नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइत्तं । चइत्तण गेहं च विदेही
 सामण्णे पज्जुवत्तित्तं ॥ ६१ ॥ एवं करन्ति संबुद्धा पण्डिया
 पवियक्खणा । विणियट्ठन्ति ज्ञोगेसु जहा से नमी रायरिसी
 त्तिवेमि, ॥ ६२ ॥

Published by Nathmalji Moolchandji,
SADRI (Marwar).

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar
Press, 23, Kolphat Lane, Bombay..
